स्वाति
भाग 2

# स्वाति

## भाग 2

कक्षा 10 'अ' पाठ्यक्रम के लिए
हिन्दी काव्य की पाठ्यपुस्तक

अनिल विद्यालंकार शशिकुमार शर्मा
रामजन्म शर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
फरवरी 1990 फाल्गुन 1911

पाँचवा पुनर्मुद्रण
फरवरी 1997 फाल्गुन 1918

**PD 160T NSY**



**एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय**

| | | | |
|---|---|---|---|
| एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस | 108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे | नवजीवन ट्रस्ट भवन | सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस |
| श्री अरविंद मार्ग | हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज | डाकघर नवजीवन | 32, बी.टी. रोड, सुखचर |
| **नई दिल्ली 110016** | **बैंगलूर 560085** | **अहमदाबाद 380014** | **24 परगना 743179** |

रु. 10.00

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सनबोन्ड सिक्योरिटी प्रिंटर्स प्रा. लि., जे-36, उद्योग नगर, पीरा गढ़ी, नई दिल्ली 110 041 द्वारा मुद्रित।

# आमुख

्र शैक्षिक नुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के तत्वावधान में
लय स्तरपर विभिन्न शैक्षिक विषयों के लिए पाठ्यक्रमों,
ुस्तकों अदि के निर्माण का कार्य लगभग ढाई दशकों से हो रहा
ष्ट्रीय क्षा नीति - 1986 के लागू होने के साथ ही ऐसी
-सामग्री की आवश्यकता का अनुभव किया जाने लगा जो नई
नीति उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक हो। इस नीति के अनुसार
बालन्द्रित होगी और छात्रों के सर्वांगीण विकास पर बल दिया
शिक्षा-नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक
हर्ण मूल्यों को केन्द्रिक शिक्षाक्रम के रूप में स्थान दिया गया
दूरगामी शिक्षा नीति है और यदि इसका पालन सही ढंग से
तो भारत के नव-निर्माण में इससे महत्त्वपूर्ण योगदान मिल

शिक्षा योजना की महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी बाह्य संरचना का
हीं है, अपितु वह परियोजना एवं दृष्टिकोण है जो शिक्षा का
ष्ट्रीय विकास के साथ जोड़ने पर बल देता है। इस दृष्टि से नवीन
तकों के निर्माण में निम्नलिखित सिद्धांतों का विशेष रूप से
किया गया है :

1. ऐसी पाठ्यसामग्री एवं शैक्षिक क्रियाओं का समावेश जिनसे बच्चों में राष्ट्रीय लक्ष्यों-जनतांत्रिकता, धर्ननिरपेक्षता, समाजवाद, सामाजिक न्याय तथा राष्ट्रीय एकता के प्रति चेतना एवं आस्था उत्पन्न हो और उनमें तर्कसंगत वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हो।

2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यसामग्री भारत की जीवन-परिस्थितियों तथा सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश पर आधारित हो

और उनमें वांछित भावी विकास की दिशा भी परिलक्षित हो।

3. पाठ्यपुस्तकें बच्चों के भावात्मक एवं बौद्धिक उत्कर्ष, चरित्र-निर्माण तथा स्वस्थ मनोवृत्ति के विकास की दृष्टि से प्रेरणादायी सिद्ध हों, उनके द्वारा छात्रों में स्वयं शिक्षा एवं अधिकाधिक ज्ञानार्जन की उत्कंठा जाग्रत हो और वे निर्धारित पाठ्यविषय तक ही सीमित न रह कर विशद एवं व्यापक अध्ययन के लिए जिज्ञासु तथा तत्पर बने रहें।

4. नई शिक्षा नीति के आधारभूत सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यसामग्री के चयन में केन्द्रिक शिक्षाक्रम से संबंधित विषय सामग्री एवं जीवन-मूल्यों पर विशेष बल हो।

5. सांप्रतिक एवं भावी जगत् को सुखद-सुंदर बनाने वाली जीवन परिस्थितियों की ओर संकेत करने वाले पाठों का समावेश किया गया हो।

उपर्युक्त सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए विविध विषयों के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक-निर्माण की योजना तैयार की गई है। इस कार्य को सभी दृष्टियों से परिपूर्ण एवं प्रामाणिक बनाने के लिए राष्ट्रीय स्तर के विषय-विशेषज्ञों, अधिकारी विद्वानों एवं शिक्षकों का सहयोग प्राप्त किया गया है। इस संदर्भ में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की हिन्दी समिति के अध्यक्ष डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा अन्य सदस्यों के सहयोग के लिए मैं विशेष आभारी हूँ।

परिषद् के सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल विद्यालंकार (अब अवकाश प्राप्त) और रीडर डॉ. शशिकुमार शर्मा (अब अवकाश प्राप्त) ने विभाग में अपने कार्यकाल के दौरान इस पुस्तक के संपादन का कार्य किया। विभाग के डॉ. रामजन्म शर्मा ने इसका अंतिम प्रारूप तैयार किया तथा बड़े परिश्रम से इसका संपादन किया। सामग्री को अन्तिम रूप देने और प्रेस कापी तैयार करने में श्रीमती उषा कुमारी ने अनेक प्रकार से मदद की है। मैं अपने इन सभी सहयोगियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

जिन कृती लेखकों ने अपनी रचनाएँ इस पुस्तक में सम्मिलित करने की अनुमति दी है, उनके प्रति हम विशेष रूप से अनुगृहीत हैं।

आशा है, छात्रों की भाषिक तथा साहित्यिक रुचियों के विकास की दृष्टि से यह पुस्तक उपादेय सिद्ध होगी। इनके परिष्कार की दृष्टि से सुविज्ञजनों द्वारा भेजे गए सुझावों और परामर्शों का हम सदा स्वागत करेंगे।

पी.एल.मल्होत्रा

*निदेशक*

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

# आभार

इस पुस्तक के निर्माण में कृपापूर्ण योगदान के लिए राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् निम्नलिखित विद्वानों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है–

डॉ. रवीन्द्र नाथ श्रीवास्तव, *अध्यक्ष, हिन्दी समिति, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड*, सुश्री कमल वासुदेव तथा डॉ. हरिश्चंद्र, श्री सुरेन्द्र पाल मित्तल, *सदस्य, केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड*, श्री निरंजन कुमार सिंह, डॉ. आनंद प्रकाश व्यास, डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, डॉ. मान सिंह वर्मा, डॉ. सुधांशु चतुर्वेदी, डॉ. एन.सुंदरम, डॉ. सुवास कुमार, डॉ. सच्चिदानंद सिंह साथी, डॉ.कमल सत्यार्थी, डॉ. जयपाल सिंह तरंग, श्री भागीरथ भार्गव, डॉ. (श्रीमती) संतोष माटा, श्री कौस्तुभ पंत, डॉ. श्याम बिहारी राय, डॉ. जंग बहादुर पाण्डेय, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. सुरेश पंत, डॉ. देवराज शर्मा 'पथिक', डॉ. शंभुनाथ, डॉ. मान्धाता ओझा, डॉ. महेन्द्रनाथ दूबे और श्री बालकृष्ण सिंहल।

# हिंदी कविता की विकास धारा

हिंदी कविता हिंदी भाषा और साहित्य की अमूल्य निधि है। हिंदी भाषा जिस प्रकार भारत की सभी अन्य भाषाओं से हिली-मिली है उसी प्रकार इसका साहित्य भी समग्र भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ कदम-से-कदम मिला कर अग्रसर होता है। इस मेल-जोल और घनिष्ठता के मूल कारण आधुनिक भारतीय साहित्य के विकास स्रोत की समानता में अंतर्निहित हैं। यही कारण है कि हिंदी काव्य भारतीय साहित्य से मिल कर उसकी समग्रता की एक झलक दिखलाता है।

हिंदी कविता की विकास यात्रा का समारंभ ढूँढते हुए विद्वान उसके आदि रूपों की तलाश में अपभ्रंश से गुजरते हुए प्राकृत भाषा तक जाते हैं। अपभ्रंश में भी जो परवर्ती साहित्य रचा गया वही हिंदी की ठीक दूसरी पीढ़ी का साहित्य है। उत्तर भारत की शौरसेनी, मागधी, अर्धमागधी, अपभ्रंशों से जो भाषा रूप चले वे आज वृहत्तर हिंदी के रूप हैं और उन्हीं का साहित्य हिंदी साहित्य है। इस हिंदी साहित्य का प्रारंभिक रूप तो लगभग पूरी तरह काव्यमय है। वस्तुतः प्रारंभिक हिंदी साहित्य का इतिहास ही हिंदी कविता का इतिहास है।

हिंदी काव्य के रूप आधुनिक हिंदी भाषा-भाषी के लिए जहाँ अधिक सरलता पूर्वक बोधगम्य हो सकते हैं वह आदिछोर बौद्ध सिद्धों के दोहों, चर्यापदों, सहजयान साधकों की बानियों, गोरखनाथ आदि संतों के वचनों, विद्यापति के गीतों, पश्चिम भारतीय क्षेत्रीय रासो, रासक और रासान्वयी काव्यों तक ही जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इसका विकास संवत् 1050 से माना है। इस प्रकार आज की हिंदी कविता का विकास लगभग 1000 वर्ष पूर्व से मानना उचित होगा।

## हिंदी साहित्य का काल विभाजन

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य के इतिहास का नामकरण और काल विभाजन इस प्रकार किया है :

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) (सं. 1050-1375) (सन् 950-1318)
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) (सं. 1375-1700) (सन् 1318-1643)
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) (सं. 1700-1900) (सन् 1643-1850)
4. आधुनिक काल (सं. 1900) (सन् 1850 से आज तक)

## आदिकाल (14 वीं शताब्दी तक)

राजनीतिक दृष्टि से यह काल आक्रमणों एवं राजनीतिक अस्थिरता का काल है। इस काल को वीरगाथा काल के रूप में भी जाना जाता है, किंतु इस काल में वीरगाथाओं के अतिरिक्त धार्मिक शिक्षा, जैन काव्य श्रृंगारिक वर्णन, सामान्य लोकाचारपरक रचनाओं और मुक्तक गीतों की परंपरा भी प्रबल थी। इस काल की मुख्य रचनाएँ दो रूपों में मिलती हैं। 1. प्रबंध काव्य के साहित्यिक रूप में, 2. वीरगाथा के रूप में। चंदबरदायी रचित 'पृथ्वीराज रासो' साहित्यिक प्रबंध के रूप में इस काल की प्रमुख रचना है। इसके अतिरिक्त इस काल में जगनिक द्वारा रचित 'आल्हखण्ड' गोरखनाथ की बानियाँ, चौरासी सिद्धों के दोहे और गीत, विद्यापति के गीत, खुसरो की पहेलियाँ एवं भाँति-भाँति के जैन चरित काव्य मिलते हैं। इस काल की अन्य मुख्य रचनाएँ हैं - विजयपाल रासो, हम्मीर रासो, कीर्तिलता, कीर्तिपताका, वीसलदेव रासो आदि।

यह काल छंदोबद्ध कविता का काल था, जहाँ संस्कृत के वर्णवृत्तों के समानांतर मात्रिक छंदों का विशेष विकास हुआ। इस प्रकार हिंदी कविता में एक साथ ही इतने अधिक प्रकार के छंदों का इस काल में विकास हुआ। इस काल की कविता की भाषा ओजगुण प्रधान थी। इसमें अपभ्रंश से विकसित पुरानी हिंदी का रूप मिलता है। छप्पय, दोहा, त्रोटक, पद्धरिया, गीत (आल्हा) आदि इस युग की कविता के प्रमुख छंद हैं। इस प्रकार संस्कृत वर्णवृत्तों की कविता का स्वरूप बहुत पीछे छूट गया और कविता का स्वरूप भी छंदोबद्ध सिद्ध हो गया जो आधुनिक

काल तक निर्बाध चलता रहा। जो सबसे बड़ी बात हुई वह यह कि गीत भी कविता की एक विशिष्ट विधा बन गई जो सीधे लोक-कंठ से आई थी।

इस प्रकार आदिकाल काव्य-शैली और प्रारंभिक प्रवृत्तियों के आधार पर आश्रयदाताओं की प्रशंसा, उनके युद्ध, विवाह और आखेट वर्णन के रूप में विशेष उल्लेखनीय हैं। कवि उन रचनाओं में विषयानुकूल ओजमयी भाषा का प्रयोग करते थे, साथ ही युद्धों का सजीव और वीररस पूर्ण वर्णन उनका उद्‌देश्य था। इस काल के कवियों ने ऐतिहासिक कथाओं का कल्पना के योग से काव्यमय चित्रण करने का प्रयास किया है।

## भक्तिकाल (15 वीं- 16 वीं शताब्दी तक)

राजनीतिक दृष्टि से यह काल मुगलों के स्थापित होने का काल था। इस्लामी आक्रमणकारियों का जनजीवन पर बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ा। इन्हीं परिस्थितियों में भारतीय चिंतन धारा को विकसित होने का अवसर मिला। इस काल में जन जीवन से जुड़े अनेक ऐसे कवि हुए, जिन्होंने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों आदि का खंडन किया और जनता को एक-दूसरे के निकट लाने का प्रयास किया।

हिंदी कविता का यह काल लगभग 400 वर्षों तक जीवंत बना रहा। इस काल में जो साहित्य है उसमें भाषा भेद तो है – जैसे राजस्थानी, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी और मैथिली के रंग अलग-अलग हैं – किंतु भावधारा इतने स्पष्ट रूप से एक है कि भाषा वैविध्य पर किसी का ध्यान ही नहीं जाता और यही भावधारा है भक्ति की धारा। अनेक विशिष्टताओं के कारण इस काल को स्वर्णयुग कहा जाता है।

कहा जाता है कि भक्ति का जन्म दक्षिण में हुआ था। उसे उत्तर में लाने का श्रेय रामानंद को है, जो रामानुजाचार्य की ही शिष्य परंपरा के थे। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों के कारण भक्ति धारा ने एक आंदोलन का रूप धारण कर लिया, जिसे भक्ति आंदोलन के रूप में स्वीकार किया गया। इस भक्ति आंदोलन को जन सामान्य में फैलाने का श्रेय स्वामी रामानंद को दिया जाता है। महाप्रभु वल्लभाचार्य

ने कृष्णभक्ति और रामानंद ने रामभक्त कवियों को भक्ति काव्य रचना की प्रेरणा दी।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उपास्य देव के स्वरूप अर्थात् निर्गुण सगुण के आधार पर दो वर्ग किए – निर्गुण भक्ति कविता और सगुण भक्ति कविता।

निर्गुण भक्ति धारा दो रूपों में विभक्त हो गई – पहली ज्ञानमार्गी शाखा और दूसरी प्रेममार्गी शाखा।

सगुण भक्ति कविता भी दो प्रकार की है राम भक्ति संबंधी और कृष्ण भक्ति संबंधी।

ज्ञान मार्गी शाखा के कवियों ने मूर्तिपूजा, रोजा, नमाज, तंत्रवाद और बहुदेववाद का विरोध किया। इन कवियों ने बाह्याडंबरों और अंध-विश्वासों पर करारी चोट की। इनके लिये गुरु ही सब कुछ था। निर्गुण संत कवियों में कबीर सबसे महत्त्वपूर्ण कवि हैं। कबीर स्वामी रामानंद के शिष्य थे। कबीर की रचनाएँ साखी, सबद और रमैनी के रूप में मिलती हैं। धर्मदास, रैदास, मलूकदास, नानक, रज्जब, दादू दयाल आदि इस धारा के अन्य प्रमुख कवि हैं।

प्रेममार्गी शाखा के कवियों ने इस्लाम की सूफी विचारधारा के अनुसार ईश्वर को निर्गुण मानते हुए लौकिक प्रेम गाथाओं के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम का स्वरूप अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है। वस्तुतः प्रेममार्गी शाखा के कवि प्रेम को ही ईश्वर प्राप्ति का मूलाधार मानते थे। इस शाखा के कवियों में जायसी, कुतुबन और मंझन प्रमुख हैं। मलिक मुहम्मद जायसी इस शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। जायसी ने 'पदमावत' नामक प्रबंध काव्य में राजा रत्नसेन और पदमावती की प्रख्यात लोककथा को आध्यात्मिक धरातल पर उतारने का सफल प्रयास किया है। प्रेममार्गी कवियों की रचनाएँ प्रायः अवधी भाषा में हैं और दोहा चौपाई उनके प्रमुख छंद हैं। जायसी का 'पदमावत' फारसी की मसनवी शैली में लिखा गया है।

सगुण भक्ति की राम भक्ति धारा में गोस्वामी तुलसीदास का नाम सर्वोपरि है। तुलसी ने अपने महत्त्वपूर्ण महाकाव्य 'रामचरितमानस' में राम को ईश्वर का अवतार मान कर उनके सगुण रूप को प्रतिपादित किया है। 'रामचरितमानस' में गुरु-शिष्य,

माता-पिता, पति-पत्नी, भाई-बहन के आदर्श संबंधों पर विशेष प्रकाश डाला गया है। तुलसीदास द्वारा रचित 12 ग्रंथ प्रामाणिक माने जाते हैं–दोहावली, कवित्त रामायण (कवितावली), गीतावली, रामचरितमानस, रामाज्ञा प्रश्न, विनयपत्रिका, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण, वैराग्य संदीपनी और श्रीकृष्ण गीतावली।

इस शाखा के कवियों की भाषा प्रायः अवधी है। कहीं-कहीं ब्रज और अवधी का मिला-जुला रूप भी दिखाई देता है। राम काव्यों की रचना दोहा और चौपाइयों में अधिक हुई है। राम भक्ति शाखा के कवियों में केशवदास, अग्रदास, नाभादास, हृदयराम आदि उल्लेखनीय हैं।

कृष्ण भक्त कवियों ने कृष्ण को आराध्य मानकर अपने काव्य में कृष्ण की ब्रजलीलाओं का मुख्य रूप से वर्णन किया। महाकवि सूरदास, कृष्ण भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। सूरदास ने भागवत को आधार बनाकर 'सूरसागर' की रचना की। 'सूरसागर' में कृष्ण की बाललीला तथा गोपियों के प्रेम, संयोग और वियोग का मनोहारी वर्णन मिलता है। इस शाखा के कवियों ने ब्रजभाषा और पद शैली में रचनाएँ की हैं। कृष्ण भक्तिशाखा के प्रमुख कवियों को 'अष्टछाप' के कवि नाम से भी जाना जाता है। अष्टछाप के कवि हैं - सूरदास, कुंभनदास, परमानंद दास, कृष्णदास, नंददास, गोविंददास, छीत स्वामी और चतुर्भुजदास। इनमें सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, वल्लभाचार्य के और नंददास, गोविंददास, छीतस्वामी चतुर्भुजदास, गोसाई विट्ठलनाथ के शिष्य थे।

## रीतिकाल (17 वीं - 18 वीं शताब्दी तक)

इस काल तक आते-आते मुगल साम्राज्य पूर्ण रूप से स्थापित हो चुका था। राजदरबारों में विलासिता की प्रवृत्ति बढ़ने लगी थी। साहित्य भी इससे अछूता न रह सका। कवि राज दरबारों के आश्रय में रह कर शृंगार परक कविताएँ करने लगे। इसीलिए रीतिकाल को शृंगारकाल के नाम से भी जाना जाता है।

इस काल की हिंदी कविता में ऐसी कविताएँ अधिक रची गईं, जिनमें कविता के शास्त्र पक्ष को, यानी लक्षणों को प्रस्तुत किया गया है। कुछ कवियों ने लक्षणों को आधार मानकर उदाहरण स्वरूप लक्ष्य कविता भी रची हैं। कुछ कवियों ने केवल लक्ष्य काव्य ही रचा है। कुछ ने लक्षण-लक्ष्य का ध्यान न कर विशुद्ध भाव से मात्र कविता की है। यद्यपि ऐसे कवियों में शृंगारिक कविताओं की प्रधानता है। इस काल में मुक्तक रचनाओं के साथ ही अनेक प्रबंध काव्य भी रचे गए। इस काल में अधिकांश कवि किसी राजे महाराजे, रईस के संरक्षण में रहकर रचनाएँ करते थे। प्रभु को प्रसन्न करने के लिए वे नायक-नायिका भेद की भी चर्चा करते थे।

परंतु कुछ ऐसे भी थे जो वीरता की भावना को जगाते थे। इनके अलावा अनेक कवि स्वतंत्र रूप से भी अपनी कविताएँ करते थे। ऐसे कवियों में शृंगार भाव होता था, पर भक्ति, राजनीति, समाज चेतना-परक कविताएँ भी इस काल में प्रचुर मात्रा में रची गईं।

इस काल ने हिंदी कविता को पर्याप्त समृद्ध किया। ब्रज और अवधी का अनोखा मेल हुआ। कविता के कलापक्ष को अतिशय बारीकी से तराशा गया। शब्द की शक्ति को पहचानने और उसकी भरपूर क्षमता का उपयोग करने का प्रयास किया गया। कवि-कौशल-परक इस प्रकार के कार्यों का आरंभ भक्तिकालीन कवि केशवदास द्वारा रचित 'रामचंद्रिका' से ही हो गया था जहाँ वर्ण्य विषय पर ध्यान केंद्रित करने की जगह वर्णन कौशल पर अधिक ध्यान दिया गया था। इस प्रकार के कवियों में बिहारी, देव, मतिराम, पद्‌माकर, बोधा, ठाकुर, घनानंद और भूषण अधिक उल्लेखनीय हैं। लोक चेतना, सामाजिक शिष्टाचार एवं नीतिपरक ढंग की रचना करने वालों में वृंद, बोधा, गिरधर कविराय और देवदास प्रसिद्ध हैं।

**आधुनिक काल (सन् 1850 से अब तक)**

सन् 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम ने भारत में एक नई चेतना की लहर प्रवाहित की। जन जीवन के साथ ही साहित्य भी इससे प्रभावित हुआ। इस समय के साहित्य में स्वदेश प्रेम की भावना ने बल

पकड़ा।

रीतिकाल के बाद के इस काल को पं. रामचंद्र शुक्ल ने आधुनिक काल नाम दिया। इस काल को शुक्ल जी ने उत्कर्ष काल भी कहा और गद्य की प्रमुखता देखकर गद्यकाल भी कहना चाहा।

सामान्यतः हिंदी साहित्य का आधुनिक काल 1850 ई. से माना जाता है। यही समय भारतेंदु का जन्मकाल भी है। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में राष्ट्रीयता की एक समग्र चेतना का विकास देश में हुआ। अंग्रेजी शासन से छुटकारा पाने के लिए बिखरी ताकतों को एक जुट करने का अभियान शुरू हुआ। भारतेंदु के काल तक यद्यपि अंग्रेजी शासन की स्तुति गायन की परंपरा भी चलती रही फिर भी अतंरतम में विद्रोह की लहर भी चलनी शुरू हो गई थी, जो भारतेंदु की इन दो पंक्तियों में ही बहुत स्पष्टता से परिलक्षित होती है :—

अंग्रेज-राज सुख-साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।

भारतेंदु युग के रचनाकार कविता के क्षेत्र में चाहे ब्रजभाषा के मोह से भले ही त्रस्त रहे हों, उन्होंने कविता के विषय क्षेत्र को बहुत अधिक विस्तार दे दिया। कविता केवल आराधना, प्रशंसा या श्रृंगार चर्चा तक ही सीमित नहीं रही, अपितु जीवन के हर एक पक्ष को अभिव्यक्त करने में सचेष्ट हो चली। कवियों का ध्यान देशोद्धार, राष्ट्रप्रेम, अतीत के गौरव आदि विषयों की ओर गया। इस काल के कवियों में 'भारतेंदु', बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', प्रतापनारायण मिश्र, अबिंकादत्त व्यास आदि मुख्य हैं। इस प्रकार कविता में आधुनिकता भारतेंदु काल से ही आ गई थी और इसी से हिंदी कविता का आधुनिक काल भारतेंदु युग से माना जाता है।

भारतेंदु के बाद हिंदी कविता को सबसे अधिक बल प्रदान किया महावीरप्रसाद द्विवेदी ने। द्विवेदी जी ने कवियों को विषय क्षेत्र भी सुझाए और कविता की भाषा भी सुधारी। उनके इस प्रयास के कारण खड़ी बोली हिंदी का पर्याय बन गई। उनके काल तक जो कवि ब्रजभाषा में कविता कर रहे थे वे सभी खड़ी बोली में कविता करने लगे। इस काल के कवियों ने सामाजिक, ऐतिहासिक और पौराणिक संदर्भों को काव्य का विषय बनाकर मुक्तक काव्यों के अतिरिक्त खण्ड एवं प्रबंध काव्यों की

रचना भी की। इस काल के कवियों में श्रीधर पाठक, मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' और रामनरेश त्रिपाठी उल्लेखनीय हैं।

सन् 1920 के आसपास छायावाद का उदय हुआ। कविता में इस भावधारा का आरंभ मुकुटधर पांडेय की कविता 'कुररी के प्रति' से माना जाता है। यह कविता सन् 1920 में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी। इस काल में कवियों ने रूढ़िगत काव्य विषय और उपमानों को प्रायः छोड़ दिया। काव्य रचना में नूतन प्रवृत्ति और शैली का उदय होने लगा। काव्य भाषा में लाक्षणिक प्रयोगों को प्रधानता दी जाने लगी। कविता में प्रतीकात्मक तत्वों की प्रधानता बढ़ने लगी। इस काल में मुक्त छंद के अतिरिक्त स्वच्छंद कविता शैली का विकास हुआ। वैयक्तिकता, जिज्ञासा, प्रकृति का मानवीकरण, नारी का विविध रूपों में चित्रण छायावादी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत एवं महादेवी वर्मा का नाम उल्लेखनीय है। प्रसाद की कामायनी इस काल की श्रेष्ठ रचना है।

आगे चलकर छायावादी कविता की प्रवृत्ति विशेष के रूप में रहस्यवाद का नाम आया। रहस्यवाद में प्रकृति के प्रति एक नवीन दृष्टिकोण उभरने लगा। सौंदर्य, प्रेम और शृंगार इस कविता की विशेषताएँ हैं। प्रसाद, पंत और महादेवी वर्मा का नाम रहस्यवाद से विशेष रूप से जुड़ा है।

इन्हीं दिनों हरिवंश राय 'बच्चन', नरेंद्र शर्मा, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल', भगवती चरण वर्मा, गोपाल सिंह नेपाली और शिवमंगल सिंह 'सुमन' आदि की प्रगीतधर्मी रचनाओं ने लोकप्रियता प्राप्त की। इनके गीतों ने कवि सम्मेलनों में धूम मचा दी। बाद में गोपालदास 'नीरज' रामावतार त्यागी, रामानंद दोषी, रमानाथ अवस्थी, वीरेन्द्र मिश्र आदि ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया।

सन् 1936 के आसपास कविता के क्षेत्र में जिस नवीन भावधारा का उदय हुआ उसे प्रगतिवाद के नाम से जाना जाता है। प्रगतिवादी कविता में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक शोषण से मुक्ति का स्वर है। आरंभ में सुमित्रानंदन पंत और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने

प्रगतिवादी कविता को नया स्वर दिया। गजानन माधव 'मुक्तिबोध', केदारनाथ अग्रवाल, नागार्जुन, त्रिलोचन आदि इस भावधारा के सशक्त कवि हैं।

सन् 1943 में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ने 'तार सप्तक' नाम से एक कविता संग्रह संपादित किया। इस संग्रह में सात कवियों की रचनाएँ थीं। इन कवियों ने कविता में भाव, विचार, प्रक्रिया, छंद, प्रतीक, अलंकार में परिवर्तन करने की चेष्टा की। इन कवियों की रचनाओं में बौद्धिक चिंतन की प्रधानता है। प्रयोगवादी कवियों में 'अज्ञेय', गिरिजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, मुक्तिबोध, नेमिचंद जैन, भारतभूषण अग्रवाल, शमशेर बहादुर सिंह, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

इसी भावधारा के कवियों ने नई प्रवृत्तियों को अपना कर - 'नयी कविता' को जन्म दिया।

हिंदी कविता में एक बड़ा मोड़ भारत पर चीन के आक्रमण 1962 ई. के बाद आया। तभी औद्योगिक विकास के समानांतर मनुष्य की घटती ताकत को भी गंभीरता से लिया गया। इस दौरान लघुमानव, बुभुक्षु मानव या भूखी पीढ़ी, कामना-वासना के पंक में सने मानव आदि को लेकर कविताएँ रची गईं। कविताओं का एक वह वर्ग भी आया जो कविता के परंपरित रूपों को पूरी तरह से नकार देने के कारण 'अकविता' नाम से विख्यात हुआ। फिर समकालीन कविता एक नया नाम आया।

इधर हिंदी कविता के क्षेत्र में जिन विशिष्ट कवियों ने विशेष योगदान दिया है, उनमें भवानीप्रसाद मिश्र, नागार्जुन, धूमिल, रघुवीर सहाय, त्रिलोचन शास्त्री, शमशेरबहादुर सिंह, धर्मवीर भारती, केदारनाथ सिंह, नरेश मेहता, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, दुष्यंत कुमार, ज्ञानेंद्र पति, राजेश जोशी, लीलाधर जगूड़ी, विनोद कुमार शुक्ल, सोमदत्त आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदी कविता अपने विकास पथ पर निरंतर विकसित होती चली आ रही है।

प्रस्तुत संकलन में संकलित रचनाओं का वर्गीकरण विषयानुसार किया गया है। विविध आस्वादों की अट्ठाईस कविताओं को सात वर्गों में विभाजित किया गया है।

''प्रकृति सौंदर्य''—मानव और प्रकृति का अटूट संबंध है। प्रकृति की नितनूतनता पर प्रत्येक भाषा में प्रायः प्रत्येक कवि ने कुछ-न-कुछ लिखा है। इस संकलन में 'प्रकृति सौंदर्य' की कविताओं में ग्रीष्म और वर्षाऋतु के सौंदर्य पर खड़ी बोली हिंदी के प्रारंभिक मोड़ के कवियों भारतेंदु और श्रीधर पाठक की रचनाएँ दी गई हैं। 'रजनीबाला' कविता रात्रि को प्रत्यक्ष संबोधन कर लिखी गई है। 'उषा' कविता के उपमान बड़े नवीन और ताजा हैं जो उसकी पावनता, निर्मलता, और उंज्ज्वलता को सरल भाषा में उजागर करते हैं। 'आए महंत वसंत' शीर्षक पूरी कविता एक मनोहारी रूपक है, जिसमें वसंत के साथ आने वाले लाव-लश्कर का भी चित्रण है।

प्रेम और सौंदर्य' वर्ग में मानवीय प्रेम तथा रूप-सौंदर्य की विविध भंगिमाओं पर कुछ पुराने और कुछ नए कवियों की रचनाएँ प्रस्तुत की गई हैं। रसखान और बेनी की रचनाओं में राधाकृष्ण के सौंदर्य का चित्रण है। भारतेंदु की विदा वेला पर लिखी गई कविता विदाई के क्षण की वेदना को रेखांकित करती है और दूसरी कविता ब्रजभूमि के प्रति अनुराग को। 'प्रेम' शीर्षक रचना प्रेम की सर्वव्याप्ति और सामर्थ्य को ही नहीं उसके व्यापक प्रभाव का भी समर्थ चित्रण करती है।' जो तुम आ जाते एक बार' में प्रिय के आगमन से संभावित अनेक मधुर कामनाएँ की गई हैं। 'परिचय की गाँठ' शीर्षक रचना मधुर स्मृतियों के अनायास याद हो आने और परिचय के गहराने की अनुभूति है।

'जीवन-दर्शन' वर्ग में तुलसी का एक सशक्त रूपक विजय रथ, राम की आत्मिक समृद्धि का वर्णन कर यह प्रतिपादित करता है कि धर्म मय रथ जिसके पास हो, शत्रु उसका कुछ नहीं कर सकते। 'जो बीत गई सो बात गई' में विनष्ट विभूति के लिये आँसू वहाने के बदले भविष्य को नए सिरे से गढ़ने का संदेश है। 'गुलावी चूड़ियाँ' – घर परिवार से विलग कार्य में रत ड्राइवर के वात्सल्य को अभिव्यक्त करती है। उनके सहारे मुच्छड़ रोबीले चेहरे की बड़ी-वड़ी आँखों में बच्ची का स्नेह तैर आता है। अपने शीर्षक के अनुकूल 'सच है महज संघर्ष ही' कविता जीवन में संघर्ष को महत्त्वपूर्ण मानती है। 'मृत्तिका' कविता सीधे सरल बिंबों के सहारे पुरुषार्थी मनुष्य और मिट्टी के संबंधों पर प्रकाश डालती है।

'भक्ति' वर्ग में तुलसी और रहीम के कुछ भक्ति परक दोहे भक्त और उसके आराध्य के संबंधों को उजागर करते हैं और नाम जप की महिमा बताते हैं। रहीम तो सबसे प्रेमपूर्ण व्यवहार का परामर्श देते हैं, क्योंकि पता नहीं किस वेश में ईश्वर मिल जाए। 'मौन करुणा' का सहारा भक्त के लिए हर उथल-पुथल में सहारा बनेगा।

'उत्साह और आत्मविश्वास' वर्ग की दोनों कविताओं का ओजस्वी स्वर चुनौती भरा है। 'कौन पार फिर पहुँचाएगा' कविता में उद्धत लहरों से टकराने के बाद ही सफलता प्राप्ति संभव मानी गई है। 'लोहे के पेड़ हरे होंगे' प्रबल आत्मविश्वास की कविता है। दुख और निराशा के वातावरण में त्याग और बलिदान की प्रेरणा भी यह कविता देती है।

देश प्रेम और मानवता' शीर्षक के अंतर्गत प्रथम कविता 'हमारा प्यारा भारत वर्ष' भारत के गौरवशाली अतीत का चित्रण करती हुई उसकी अनेक उपलब्धियों की चर्चा करती है और भारतीयता के अभिलक्षणों को रेखांकित करती है। दूसरी कविता 'मातृभूमि' में मातृभूमि की सहज सरल शब्दों मे अभ्यर्थना है। प्रारंभ में मातृभूमि का विराट और आकर्षक रूपांकन करने के बाद कवि अपनी संतान के प्रति मातृभूमि के उपकारों की चर्चा करता है और उसकी शोभा, सुषमा एवं विभूति का बखान कर अंततः उसी की मिट्टी में मिल जाने की कामना करता है।

'विविध' वर्ग में 'सरोज स्मृति' कविता निराला की सुप्रसिद्ध रचना है, जो उन्होंने अपनी पुत्री के असामयिक निधन पर लिखी थी। यह हिंदी का उत्कृष्ट शोक गीत है। कविता से यह भी उजागर होता है कि सरस्वती के एकांत साधक निराला का जीवन कितना एकाकी और कष्टभरा था। कुँवर नारायण की छोटी-सी रचना 'सवेरे-सवेरे' में अनेक लुभावने बिंबों के सहारे प्रातः काल का चित्रण किया गया है। कवि उसकी तुलना माँ के दुलार से करता है। 'लोहे का स्वाद' मेहनतकश और शोषक के संबंधों पर छोटी किंतु सशक्त रचना है।

**सूचना :** परिषद् ने नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिव मंगल सिंह सुमन, केदार नाथ सिंह पर विडियो फिल्में तैयार की हैं। कृपया अध्यापक तथा विद्यार्थी इन्हें देखें।

## गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

## विषय -सूची

# 1. प्रकृति सौंदर्य

रचनाएँ

भारतेन्दु — प्रेम माधुरी, प्रेम तरंग, वर्षा विनोद
1850-1885 भारतेन्दु ग्रंथा

श्रीधर पाठक — एकान्तवासी योगी
1859-1922 श्रान्त पथिक
ऊजड़ ग्राम
काश्मीर सुषमा

रामकुमार वर्मा — अंजलि
जन्म 1905
रूपराशि
एकलव्य - प्रबन्ध काव्य
चित्तौड़ की चिता
चित्ररेखा
निशीथ
जौहर

शमशेर बहादुर सिंह
जन्म 13 जनवरी 1911

कुछ कविताएँ
कुछ और कविताएँ
इतने पास अपने
बात बोलेगी
काल तुझसे होड़ है मेरी

## 1.1 कूकै लगीं कोइलें

कूकै लगीं कोइलें कदंबन पै बैठि फेरि

धोए-धोए पात हिलि-हिलि सरसै लगे।

बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि

देखि कै सँजोगी जन हिय हरसै लगे ।।

हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी

लखि 'हरिचंद' फेर प्रान तरसै लगे।

फेरि झूमि-झूमि बरषा की ऋतु आई फेरि

बादर निगोरे झुकि-झुकि बरसै लगे ।।

– भारतेंदु हरिश्चंद्र

## 1.2 प्रकृति-वर्णन

जेठ के दारुण आतप से, तप के जगती- तल जावै जला,

नभ मंडल छाया मरुस्थल-सा दल बाँध के अंधड़ आवै चला।

जल-हीन जलाशय, व्याकुल हैं पशु-पक्षी, प्रचंड है भानुकला,

किसी कानन कुंज के धाम में प्यारे, करैं विसिराम चलौ तो भला ।।

काली घटा का घमंड घटा, नभ-मंडल तारका-वृंद खिले,

उजियाली निशा, छविशाली दिशा, अति सोहै धरातल फूले-फले।

निखरे सुथरे बन पंथ खुले, तरु पल्लव चंद्रकला से धुले,
वन शारदी चंद्रिका-चादर ओढ़ें, लसै समलंकृत कैसे भले।।

— श्रीधर पाठक

## 1.3 रजनी-बाला

इस सोते संसार बीच,
जगकर सजकर रजनी बाले
कहाँ बेचने ले जाती हो,
ये गजरे तारों वाले ?
मोल करेगा कौन
सो रही हैं उत्सुक आँखें सारी ?
मत कुम्हलाने दो,
सूनेपन में अपनी निधियाँ न्यारी।।
निर्झर के निर्मल जल में,
ये गजरे हिला-हिला धोना।
लहर-लहर कर यदि चूमे तो,
किंचित् विचलित मत होना।।
होने दो प्रतिबिंब विचुंबित,
लहरों ही में लहराना।
लो मेरे तारों के गजरे,
निर्झर-स्वर में यह गाना।।
यदि प्रभात तक कोई आकर।
तुम से हाय न मोल करे।
तो फूलों पर ओस रूप में,
बिखरा देना सब गजरे।।

-रामकुमार वर्मा

## 1.4 उषा

प्रात नभ था - बहुत नीला, शंख जैसे,
भोर का नभ,
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)।
बहुत काली सिल
ज़रा से लाल केसर से
कि जैसे धुल गई हो ;
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने।
नील जल में या
किसी की गौर, झिलमिल देह जैसे
हिल रही हो।
और...
जादू टूटता है इस उषा का अब :
सूर्योदय हो रहा है।

— शमशेर बहादुर सिंह

## 1.5 आए महंत वसंत

आए महंत वसंत।
मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला,
बैठे किंशुक छत्र लगा बाँध पाग पीला,
चँवर सदृश डोल रहे सरसों के सर अनंत।
आए महंत वसंत।
श्रद्धानत तरुओं की अंजलि से झरे पात,

कोंपल के मुँदे नयन थर-थर-थर पुलकगात,
अगरु धूम लिए, झूम रहे सुमन दिग-दिगंत।
आए महंत वसंत।

खड़-खड़ करताल बजा नाच रही विसुध हवा,
डाल-डाल अलि-पिक के गायन का बँधा समाँ,
तरु-तरु की ध्वजा उठी जय-जय का है न अंत।
आए महंत वसंत।

— सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

# प्रश्न-अभ्यास

## 1.1. कूकै लगीं कोइलें

1. भारतेंदु के इस सवैया में मुख्य प्रतिपाद्य क्या है?
   वर्षा ऋतु वर्णन अथवा नायिका की विरह वेदना, उदाहरण सहित स्पष्ट रूप में लिखिए।
2. इस कवित्त में 'फेरि' शब्द की बार-बार आवृत्ति क्यों हुई है ?

## 1.2 प्रकृति वर्णन

1. श्रीधर पाठक के प्रथम सवैया में किस असहय वातावरण के कारण प्रिय से किसी सघन वन कुंज में ही विश्राम का आग्रह किया गया है ?
2. सवैये के आधार पर शरद चाँदनी में वन्य शोभा का संक्षिप्त शब्द चित्र अंकित कीजिए।

## 1.3 रजनी-बाला

1. कवि रजनी बाला से तारों वाले गजरे बेचने के लिये क्यों मना करता है?
2. जगी हुई उत्सुक आँखें ही प्रकृति की सुंदरता का मूल्य समझ सकती हैं।
   इस कथन की पुष्टि इस कविता के आधार पर कीजिए।
3. प्रकृति अपना सर्वस्व इस धरा पर निछावर कर देती है। इस भाव को कविता की किन पंक्तियों में दर्शाया गया है।
4. यदि सुबह होने तक रात की सुंदरता को सराहने कोई न आए तो रजनी-बाला क्या करे ?
   निम्नलिखित कथनों से उपयुक्त कथन छाँटिए :-
   (क) विरह का मधुर-गीत गाएं।
   (ख) फूलों पर आँसू के कण छोड़ आए।

(ग) चमन के फूलों को डाली से गिरा दे।
(घ) निर्झर स्वर में गाकर चली जाए।

5. भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:
   (क) होने दो प्रतिबिंब ....... यह गाना।
   (ख) मोल करेगा ..... निधियाँ सारी।
6. निम्नलिखित शीर्षकों पर प्रकृति सौंदर्य की कविताएँ संकलित कीजिए और कवि गोष्ठी में सुनाइए :
   प्रभात, संध्या, जेठ की दुपहरी और वसंत बयार

### 1.4 उषा

1. सूर्योदय से उषा का कौन-सा जादू टूट रहा है ?
2. भोर के नभ को राख से लीपा गीला चौका क्यों कहा गया है ?
3. 'उषा' कविता में प्रातःकालीन आकाश की पवित्रता, निर्मलता और उज्ज्वलता के लिए कवि द्वारा प्रयुक्त निम्नलिखित कथनों को यथाक्रम लिखिए :
   (क) काली सिल जरा से लाल केसर से कि जैसे धुल गई हो,
   (ख) राख से लीपा हुआ चौका
   (ग) नील जल में किसी की गौर, झिलमिल देह जैसे हिल रही हो
4. कविता में प्रयुक्त उपमा और उत्प्रेक्षा अलंकार छाँटिए।

### 1.5 आए महंत वसंत

1. कवि ने वसंत का आगमन किस रूप में व्यक्त किया है ?
2. ऋतुराज महंत को सवारी के रूप में क्यों चित्रित किया है ?
   (क) राजाओं की सवारी का रूप ओझल हो गया है।
   (ख) महंत की सवारी के प्रति अभी श्रद्धा और उत्सुकता-भाव विद्यमान है।
   (ग) वसंत का रूप अन्य किसी की सवारी से सराहा नहीं जा सकता।
   (घ) वसंत के प्रति हमारे हृदय में भक्ति की भावना है।
3. वसंत को महंत न कह कर संत कहा जाता तो क्या अर्थ विसंगति हो जाती?
4. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार बताइए :
   (क) मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला
   (ख) बैठै किंशुक छत्र लगा बाँध पाग पीला
5. महंत की सवारी-भक्तों की चित्र छवि तथा कीर्तन के ध्वनि सौंदर्य को कविता में किस प्रकार प्रस्तुत किया है।
6. वसंत पर कविताओं का संकलन कीजिए और किसी अवसर पर सुनाइए, अथवा सचित्र वसंत विशेषांक की हस्तलिखित पत्रिका तैयार कीजिए।

# शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

## 1.1 कूकै लगीं कोइलें

दादुर = मेंढक
सीरी = ठंडी

## 1.2 प्रकृति-वर्णन

दारुण = कठिन
आतप = गरमी
अंधड़ = आँधी तूफान
समलंकृत = शोभायमान

## 1.3 रजनी-बाला

रजनी बाले = रात रूपी बाला/सुंदरी
उत्सुक आँखें = ललकभरी आँखें
विचलित होना = अस्थिर होना, चंचल होना

## 1.4 उषा

सिल = मसाला पीसने वाला पत्थर
केसर = फूल के बीच की रेखा जो सुगंधित होती है

## 1.5 आए महंत वसंत

महंत = मठाधीश, साधुसंतों का मुखिया, जिसकी हाथी की सवारी बहुत धूमधाम से निकलती है।

किंशुक = पलाश, ढाक
पुलक गात = प्रसन्न तन
अगरु धूम = अगरबत्ती का सुगंधित धुआँ
करताल = एक वाद्य यंत्र जो दोनों हाथों से बजाया जाता है
अलि = भौंरा
पिक = कोयल
बँधा समा = वातावरण बना

## 2. प्रेम और सौंदर्य

रसखान की रचनाएँ

1. सुजान रसखान
2. प्रेम वाटिका

सौंदर्य एवं प्रेम के कवि
प्रेम के अलौकिक रूप का चित्रण
भाषा - ब्रज - माधुर्य गुण से ओतप्रोत एवं संगीतमय
छंद - सवैया शैली

## 2.1 कुलकानि हियो तजि भाजति है

कल कानन कुंडल मोरपखा उर पै बनमाल बिराजति है।
मुरली कर में अधरा मुसकानि तरंग महाछवि छाजति है।।
रसखानि लखै तन पीतपटा सत दामिनी की दुति लाजति है।
वह बाँसुरी की धुनि कानि परें, कुलकानि हियो तजि भाजति है।।

— रसखान

## 2.2. युगल छवि

छहरै सिर पै छवि मोरपखा, उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
फहरै पियरो पट बेनी इतै, उनकी चुनरी के झबा झहरैं।
रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ रसख्याल चहैं लहरैं।
नित ऐसे सनेह सों राधिका स्याम, हमारे हिए में सदा बिहरैं।

— बेनी (प्राचीन)

## 2.3 राधा-सौंदर्य

करि की चुराई चाल, सिंह को चुरायो लंक,
ससि को चुरायो मुख, नासा चोरी कीर की।
पिक को चुरायो बैन, मृग को चुरायो नैन,
दसन अनार, हाँसी बीजुरी गँभीर की।
कहै कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराई लीनी,
रती रती सोभा सब रति के सरीर की।
अब तो कन्हैया जू को चितहू चुराय लीनो,
छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की।

— बेनी बंदीजन

## 2.4 विदा की समै सब कंठ लगावै

आजु लौं जो न मिले तो कहा
हम तो तुमरे सब भाँति कहावैं।
मेरो उराहनो है कछु नाहिं
सबै फल आपुने भाग को पावैं।।
जो हरिचंद भई सो भई
अब प्रान चले चहै तासों सुनावैं।
प्यारे जू है जग की यह रीति
बिदा की समै सब कंठ लगावै।

— भारतेंदु हरिश्चंद्र

## 2.5 याचना

ब्रज के लता पता मोहिं कीजै।
गोपी पद-पंकज पावन की रज जासैं सिर भीजै।
आवत जात कुंज की गलियन रूप-सुधा नित पीजै।
श्रीराधे राधे मुख यह बर हरीचंद को दीजै।

— भारतेंदु हरिश्चंद्र

## 2.6 प्रेम

है कौन सा वह तत्व, जो सारे भुवन में व्याप्त है,
ब्रह्मांड पूरा भी नहीं जिसके लिए पर्याप्त है ?
है कौन सी वह शक्ति, क्यों जी ! कौन सा वह भेद है ?
बस, ध्यान ही जिसका मिटाता आपका सब शोक है,
बिछुड़े हुओं का हृदय कैसे एक रहता है, अहो !
वे कौन से आधार के बल कष्ट सहते हैं, कहो ?
क्या क्लेश ? कैसा दुख ? सब को धैर्य से वे सह रहे,
है डूबने का भय न कुछ, आनंद में वे बह रहे। वह प्रेम ...
क्या हेतु, जो मकरंद पर हैं भ्रमर मोहित हो रहे ?
क्यों भूल अपने को रहे, क्यों सभी सुधि-बुधि खो रहे ?
किस ज्योति पर निश्शंक हृदय पतंग लालायित हुए ?
जाते शिखा की ओर, यों निज नाश हित प्रस्तुत हुए ? वह प्रेम ...
आकाश में, जल में, हवा में, विपिन में, क्या बाग में,
घर में, हृदय में, गाँव में, तरु में तथैव तड़ाग में,
है कौन सी वह शक्ति, जो है एक सी रहती सदा
जो है जुदा करके मिलाती, मिलाकर करती जुदा ? वह प्रेम है.....
चैतन्य को जड़ कर दिया, जड़ को किया चैतन्य है,

बस प्रेम की अद्‌भुत, अलौकिक उस प्रभा को धन्य है,
क्यों, कौन सा है वह नियम, जिससे कि चालित है मही ?
वह तो वही है, जो सदा ही दीखता है सब कहीं। वह प्रेम है ...
यह देखिए, घन घोर कैसा शोर आज मचा रहा।
सब प्राणियों के मत्त-मनोमयूर अहा ! नचा रहा।
ये बूँद हैं, या क्या ! कि जो यह है यहाँ बरसा रहा ?
सारी मही को क्यों भला इस भाँति है हरषा रहा ? वह प्रेम है ...
यह वायु चलती वेग से, ये देखिए तरुवर झुके,
हैं आज अपनी पत्तियों में हर्ष से जाते लुके।
क्यों शोर करती है नदी, हो भीत पारावार से !
वह जा रही उस ओर क्यों ? एकांत सारी धार से। वह प्रेम है ...
यह देखिए, अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे,
हैं नेत्र माता के इन्हें लख तृप्त कैसे हो रहे।
क्यों खेलना, सोना, रुदन करना, विहँसना आदि सब;
देता अपरिमित हर्ष उसको, देखती वह इन्हें जब ? वह प्रेम है ...
वह प्रेम है, वह प्रेम है, वह प्रेम है, वह प्रेम है
है अचल जिसकी मूर्ति, हाँ-हाँ, अटल जिसका नेम है। वह प्रेम है ...

— माखनलाल चतुर्वेदी

## 2.7 जो तुम आ जाते एक बार !

जो तुम आ जाते एक बार !
कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार-तार
अनुराग-भरा उन्माद राग,
आँसू लेते वे पद पखार !
हँस उठते पल में आर्द्र नयन,

धुल जाता ओठों से विषाद,
छा जाता जीवन में वसंत,
लुट जाता चिर-संचित विराग,
आँखें देतीं सर्वस्व वार !
जो तुम आ जाते एक बार !

—महादेवी वर्मा

## परिचय की गाँठ

यों ही कुछ मुसकाकर तुमने
परिचय की यह गाँठ लगा दी ।
था पथ पर मैं भूला-भूला
फूल उपेक्षित कोई फूला
जाने कौन लहर थी उस दिन
तुमने अपनी याद जगा दी

कभी-कभी यों हो जाता है
गीत कहीं कोई गाता है
गूँज किसी उर में उठती है
तुमने वही धार उमगा दी

जड़ता है जीवन की पीड़ा
निस्तरंग पाषाणी क्रीड़ा
तुमने अनजाने वह पीड़ा
छवि के सर से दूर भगा दी

त्रिलोचन

## प्रश्न-अभ्यास

### 2.1-5 प्रेम और सौंदर्य

1. रसखान ने कृष्ण की जिस सज-धज का चित्रण किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2. ''रस रंग भिरे अभिरे हैं तमाल दोऊ, रस-ख्याल चहै लहरैं'', की राधा- कृष्ण के साथ क्या संगति बिठाई गई है ?
3. राधा को 'चोरटी' कहने के पीछे कवि ने क्या-क्या कारण गिनाए हैं? इन्हें गिनाने के पीछे कवि का क्या अभिप्राय रहा है ?
4. भारतेंदु के सवैया में नायिका कौन से तर्क देकर प्रिय से क्या-कुछ पाने का आग्रह करती है ?
5. 'याचना' में कवि किसके प्रति अपनी भक्ति भावना अर्पित करता है और क्यों?
6. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) वह बाँसुरी की धुनि कानि परै, कुलकानि हियो तजि भाजति है।
   (ख) छहरै सिर पै छवि मोर पखा उनकी नथ के मुकुता थहरैं।
   फहरै पियरो पट बेनी इतै, उनकी चुनरी के झबा झहरैं।
7. (क) कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी,
   रती रती सोभा सब रती के सरीर की।
   उपर्युक्त पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों का चमत्कार स्पष्ट कीजिए।
8. अलंकार बताइए :
   (क) गोपी पद पंकज
   (ख) रूप सुधा

### 2.6 प्रेम

1. कौन सा तत्व ब्रह्मांड से भी अधिक व्यापक है ?
2. प्रेम के सहारे बिछुड़े हृदय क्या-क्या सहन कर लेते हैं?
3. ''वह प्रेम है, वह प्रेम है, वह प्रेम है, वह प्रेम है .... ।''
   पंक्ति में प्रेम शब्द की पुनरावृत्ति क्यों की गई है ?

4. कवि के अनुसार किन-किन स्थलों में प्रेम की शक्ति सदा एक-सी-रहती है।
5. अलंकार बताइए :
   (क) हृदय-पतंग
   (ख) मत्त-मनोमयूर
   (ग) यह देखिए, अरविंद के शिशुवृंद कैसे सो रहे।
6. भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:
   जो है जुदा करके मिलाती, मिला कर करती जुदा।
7. भौंरा और पतंगा अपने प्रेम को किस प्रकार प्रदर्शित करता है ?

## 2.7 जो तुम आ जाते एक बार

1. किसके एक बार आने से कवयित्री का जीवन माधुर्य से भर उठता ?
2. प्रिय के आने से कवयित्री के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन हो सकते हैं?
3. 'जो तुम आ जाते एक बार' पंक्ति से प्रेमिका के किस मनोभाव का परिचय व्यक्त होता है।
4. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) कितनी करुणा कितने संदेश
   पथ में बिछ जाते बन पराग
   (ख) हँस उठते पल में आर्द्र नयन
   (ग) गाता प्राणों का तार-तार
   अनुराग-भरा उन्माद राग
   (घ) आँखें देतीं सर्वस्व वार

## 2.8 परिचय की गाँठ

1. प्रेयसी ने अपने किस व्यवहार से परिचय की गाँठ लगा दी ?
2. उपेक्षित फूल की तरह प्रेमी के हृदय में स्मृति की लहरें क्यों उठने लगीं?
3. दूसरे का गीत अपने मन का गुंजन कब बन जाता है ?
4. जीवन की पीड़ा को जड़ता क्यों कहा है ?
5. सौंदर्य से पीड़ा का अंत कैसे हो जाता है ?
6. भाव स्पष्ट कीजिए:
   (क) जानें कौन लहर थी उस दिन
   तुमने अपनी याद जगा दी
   (ख) गूँज किसी उर में उठती है
   तुमने वही धार उमगा दी
   (ग) तुमने अनजाने वह पीड़ा
   छवि के सर से दूर भगा दी

7. मुसकान-भरा मिलन परिचय को सुदृढ़ कर देता है यदि :
   (क) मन में अहं भाव जग जाए।
   (ख) हृदय में प्रेम-भाव जग जाए।
   (ग) मन में भक्ति भाव जग जाए।
   (घ) हृदय में श्रद्धा भाव जग जाए।

## शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

### 2.1-5 प्रेम और सौंदर्य

कल = सुंदर, शोभायमान
कुल कानि = वंश-मर्यादा
थहरैं = काँपते हैं, हिलते हैं
झबा = गुच्छा, फुंदना
करि = हाथी
लंक = कमर
कीर = तोता
दसन = दाँत
बेनी = कवि 'बेनी' और चोटी (यमक अलंकार)
रती= रत्ती-रत्ती (ज़रा-ज़रा-सी) और कामदेव की पत्नी रति (यमक अलंकार)
वेनी = रीतिकाल में बेनी नाम के तीन कवि हुए-

1. बेनी (प्राचीन)
2. बेनी प्रवीन
3. बेनी बंदीजन

पता = पत्र, पत्ता
कुंज = झुरमुट
पद पंकज = कमल रूपी चरण

### 2.6 प्रेम

भुवन = लोक, संसार
व्याप्त = फैला हुआ
लालायित हुआ = ललचाया
विपिन = वन
लख = देखकर

## 2.7 ओ तुम आ जाते एक बार

पखारना = धोना
आर्द्र = भीगे, गीला
विषाद = शोक
विराग = असंतोष

## 2.8 परिचय की गाँठ

उपेक्षित = जिस पर जानबूझकर ध्यान न दिया गया हो
उमगा दी = (भाव की) उमंग को बढ़ा दिया
निस्तरंग = बिना मौज मस्ती के
छवि के शर = सुंदरता के तीर

# ३. जीवन दर्शन

## 3.1 विजय-रथ

रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषनु भयेउ अधीरा ।।
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा ।।
नाथ न रथु नहि तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना ।।
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहि जय होइ सो स्यंदन आना ।।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका ।।
बल बिबेक दम पर हित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे ।।
ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना ।।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिज्ञान कठिन कोदंडा ।।
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना ।।
कवच अभेद बिप्र गुर पूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा ।।
सखा धर्ममय अस रथ जाके। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ।।
महा अजय संसार रिपु, जीति सकइ सो बीर।
जा के अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मति धीर।

*– तुलसीदास (रामचरितमानस), लंकाकांड से*

— तुलसीदास

## 3.2 जो बीत गई सो बात गई

(1)

जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,

माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इसके प्यारे छूटे
जो छूट गए फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर
कब अंबर शोक मनाता है।
जो बीत गई सो बात गई।

जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुवन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुरझाईं कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाईं फिर कहाँ खिलीं,
पर बोलो सूखे फूलों पर,
कब मधुवन शोर मचाता है ?
जो बीत गई सो बात गई।

(3)

जीवन में मधु का प्याला था,
तुम ने तन-मन दे डाला था,
वह टूट गया तो टूट गया,
मदिरालय का आँगन देखो,
कितने प्याले हिल जाते हैं,
गिर मिट्टी में मिल जाते हैं,
जो गिरते हैं कब उठते हैं,
पर बोलो टूटे प्यालों पर,
कब मदिरालय पछताता है
जो बीत गई सो बात गई।

(4)

मृदु मिट्टी के हैं बने हुए,
मधु-घट फूटा ही करते हैं,
लघु जीवन ले कर आए हैं,
प्याले टूटा ही करते हैं,
फिर भी मदिरालय के अंदर
मधु के घट हैं, मधु प्याले हैं,
जो मादकता के मारे हैं,
वे मधु लूटा ही करते हैं,
वह कच्चा पीने वाला है,
जिसकी ममता घट प्यालों पर,
जो सच्चे मधु से जला हुआ
कब रोता है, चिल्लाता है।
जो बीत गई सो बात गई।

— हरिवंशराय 'बच्चन'

## 3.3 गुलाबी चूड़ियाँ

प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ ?
सात साल की बच्ची का पिता तो है !
सामने गीयर से ऊपर
हुक से लटका रखी हैं
काँच की चार चूड़ियाँ गुलाबी।
बस की रफ़्तार के मुताबिक
हिलती रहतीं हैं,
झुक कर मैंने पूछ लिया,
खा गया मानो झटका।

अधेड़ उम्र का मुच्छड़ रोबीला चेहरा
आहिस्ते से बोला : हाँ सा' ब,
लाख कहता हूँ, नहीं मानती है मुनिया।
टाँगे हुए हैं कई दिनों से
अपनी अमानत यहाँ अब्बा की नजरों के सामने।

मैं भी सोचता हूँ
क्या बिगाड़ती हैं चूड़ियाँ,
किस जुर्म पे हटा दूँ इनको यहाँ से ?
और, ड्राइवर ने एक नज़र मुझे देखा,
और मैंने एक नजर उसे देखा,
छलक रहा था दूधिया वात्सल्य बड़ी-बड़ी आँखों से,
तरलता हावी थी सीधे-सादे प्रश्न पर,
और, अब वे निगाहें फिर से हो गईं सड़क की ओर।

और मैंने झुककर कहा --
हाँ भाई, मैं भी पिता हूँ,
वो तो बस यूँ हीं पूछ लिया आपसे
वर्ना ये किसको नहीं भाएँगी
नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ!

— नागार्जुन

## 3.4 सच है महज संघर्ष ही

सच हम नहीं सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष ही।
संघर्ष से हट कर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झर कर कुसुम।

जो लक्ष्य भूल रुका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।
जो हैं जहाँ चुपचाप अपने-आप से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें।
काँटे चुभें, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
हमने रचा आओ हमीं अब तोड़ दें इस प्यार को।
यह क्या मिलन मिलना वही जो मोड़ दे मँझधार को।
जो साथ फूलों के चले।
जो ढाल पाते ही ढले।
वह जिंदगी क्या ज़िंदगी जो सिर्फ पानी-सी बही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
संसार सारा आदमी की चाल देख हुआ चकित।
पर झाँक कर देखो दृगों में, हैं सभी प्यासे थकित।
जब तक बँधी है चेतना।
जब तक हृदय दुख से घना।
तब तक न मानूँगा कभी इस राह को ही मैं सही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
अपने हृदय का सत्य अपने-आप हमको खोजना।
अपने नयन का नीर अपने आप हमको पोंछना।
आकाश सुख देगा नहीं।
धरती पसीजी है कहीं ?
जिससे हृदय को बल मिले है ध्येय अपना तो वही।
सच हम नहीं सच तुम नहीं।
सच है महज संघर्ष ही।

—जगदीश गुप्त

## 3.5 मृत्तिका

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ -
जब तुम
मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं --
धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ।
जब तुम
मुझे हाथों से स्पर्श करते हो
तथा चाक पर चढ़ाकर घुमाने लगते हो
तब मैं -
कुंभ और कलश बनकर
जल लाती तुम्हारी अंतरंग प्रिया हो जाती हूँ।

जब तुम मुझे मेले में मेरे खिलौने रूप पर
आकर्षित होकर मचलने लगते हो
तब मैं --
तुम्हारे शिशु-हाथों में पहुँच प्रजारूपा हो जाती हूँ।

पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
तब मैं --
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ
(प्रतिमा बन तुम्हारी आराध्या हो जाती हूँ)
विश्वास करो
यह सबसे बड़ा देवत्व है, कि --
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।

— नरेश मेहता

## प्रश्न-अभ्यास

### 3.1 विजय-रथ

1. विभीषण किस बात से चिंतित थे ?
2. राम ने श्रेष्ठ विजय रथ की क्या-क्या विशेषताएँ बताई हैं ?
3. 'विजय-रथ' के रूपक को स्पष्ट कीजिए।
4. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
   सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका।।
   बल विवेक दम पर हित घोरे।
   छमा कृपा समता रजु जोरे।।

   (ख) ईस भजनु सारथी सुजाना।
   बिरति वर्म संतोष कृपाना।।
   दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
   बर बिग्यान कठिन कोदंडा।।
5. 'विजयरथ' के आधार पर तुलसी की काव्य भाषा की विशेषताएँ वताइए।

### 3.2 जो बीत गई सो बात गई

1. 'जो बीत गई सो बात गई' की ध्वनि पूरे गीत में व्याप्त है- कैसे ? उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
2. कवि ने किन उदाहरणों द्वारा आशा-विश्वास भरे जीवन का जयगान किया है ?
3. प्रिय पात्र के बिछुड़ने पर शोक क्यों नहीं मनाना चाहिए ?
4. कवि के अनुसार 'कच्चा पीने वाला' कौन है ?
5. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :

   लघु जीवन लेकर आए हैं,
   प्याले टूटा ही करते हैं,
   फिर भी मदिरालय के अंदर
   मधु के घट हैं, मधु प्याले हैं।

6. निम्नलिखित शब्द कविता में किस अर्थ के द्योतक हैं? सितारा, कुसुम, मधु-प्याला, मदिरालय।
7. इस गीत को कंठस्थ कीजिए और किसी सुअवसर पर सुनाइए।

### 3.3 गुलाबी चूड़ियाँ

1. ड्राइवर ने गुलाबी चूड़ियाँ लटकाने का क्या कारण बताया ?
2. "प्राइवेट बस का ड्राइवर है तो क्या हुआ" – पंक्ति में निहित कवि का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. कवि ने ड्राइवर से क्या सवाल पूछा होगा ? उसके प्रश्न का क्या उद्देश्य था ?
4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए -
   (क) छलक रहा था दूधिया वात्सल्य बड़ी-बड़ी आँखों से
   (ख) तरलता हावी थी सीधे-सादे प्रश्न पर
5. इन पंक्तियों से कवि की किस मनः स्थिति का पता चलता है ?
   हाँ भाई, मैं भी पिता हूँ,
   वो तो बस यूँ ही पूछ लिया आपसे,
   वर्ना ये किसको नहीं भाएँगी,
   नन्हीं कलाइयों की गुलाबी चूड़ियाँ
6. कवि के प्रश्न का उत्तर देते हुए रोबीले ड्राइवर की आवाज़ पर तरलता क्यों हावी हो गई।

### 3.4 सच है महज संघर्ष ही

1. इस कविता में जीवन का ध्येय क्या बताया गया है ?
2. "जो नत हुआ वह मृत हुआ", का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. जीवन-संघर्ष में किसको विजय प्राप्त होती है ? निम्नलिखित में से उपयुक्त उत्तर बताइए :
   (क) जो जीवन-संघर्ष को समझता है।
   (ख) जो जीवन-संघर्ष में विश्वास का संबल रखता है।
   (ग) जो जीवन-संघर्ष को पहचानता है।
   (घ) जो जीवन-संघर्ष में झुकता नहीं है।
4. जीवन संघर्ष में अपने आप से लड़ने का क्या अभिप्राय है ?
5. सिर्फ पानी की तरह बहने वाली ज़िन्दगी को कवि ज़िन्दगी क्यों नहीं मानता ?
6. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) जो भी परिस्थितियाँ मिलें।

काँटे चुभें कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, है संदेश जीवन का यही।

(ख) जब तक बँधी है चेतना।
जब तक हृदय दुख से घना।
तब तक न मानूँगा कभी इस राह को ही मैं सही।

(ग) आकाश सुख देगा नहीं।
धरती पसीजी है कहीं?
जिससे हृदय को बल मिले है ध्येय अपना तो वही।

### 3.5 मृत्तिका

1. "मृत्तिका" कविता में पुरुषार्थी मनुष्य के हाथों आकार पाती मिट्टी के किन-किन स्वरूपों का उल्लेख कवि ने किया है।
2. मिट्टी को क्यों कहा गया है -
   (क) मातृरूपा
   (ख) प्रियारूपा
   (ग) प्रजारूपा
   (घ) चिन्मयी शक्ति
3. पुरुषार्थ कैसे देवत्व प्राप्त करता है ?
4. मृत्तिका के माता, प्रिया और प्रजारूपों में से आपको सबसे अच्छा रूप कौन-सा लगता है और क्यों ?
5. भाव सष्ट कीजिए :
   पर जब भी तुम
   अपने पुरुषार्थ पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो
   तब मैं -
   अपने ग्राम्य-देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ।

## शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

### 3.1 विजय-रथ

स्यंदन = रथ
सौरज = शौर्य
विरति = विराग
कोदण्ड = धनुष
त्रोन = तूणीर, तरकस
सिलीमुख = बाण

### 3.2 जो बीत गई सो बात गई

वल्लरियाँ = लताएँ
मृदु = कोमल
मधु-शराब, रस

### 3.3 गुलाबी चूड़ियाँ

अधेड़ = ढलती उम्र,
अमानत = धरोहर, थाती
वात्सल्य = संतान के प्रति माता-पिता का स्नेह
तरलता = भाव-विह्वलता

### 3.4 सच है महज संघर्ष ही

वृंत = डंठल, शाखा का वह अंश जिससे फूल, फल, पत्ते आदि संयुक्त होते हैं
पाथेय = संबल
प्रणय = प्रेम
कूल = किनारा

### 3.5 मृत्तिका

मृत्तिका = मिट्टी
विदीर्ण करना = फाड़ना, चीरना
प्रजारूपा = संतान जैसी
स्वत्व = अपनापन
चिन्मयी शक्ति = परब्रह्म की सत्ता, ज्ञान स्वरुप
आराध्य =आराधना किए जाने योग्य

# 4. भक्ति

तुलसी की भक्ति
सगुण राम भक्त
नाम स्मरण

1. ईश्वर पर विश्वास
2. नामजप का महत्त्व
3. परोपकार के लिए राम का सहारा
4. गुरु कृपा

रहीम – (अब्दुर्रहीम खानखाना)

जन्म 1556 ई०
मृत्यु 1638 ई०

रहीम रचनाओं में
दोहावली, मदनाष्टक
दोहों में नगरशोभा
पहले लगभग 300
नीतिविषयक दोहे ही
मिलते हैं।

दोहों में जीवन की विविध अनुभूतियों का मार्मिक चित्रण
भक्ति, नीति, लोक व्यवहार, मर्यादा, प्रेम, वैराग्य,
परोपकार, लोकहित
कुछ दोहे शृंगारपरक भी हैं।
सरल ब्रज भाषा का प्रयोग

## 4.1 तुलसीदास के दोहे

एक भरोसो, एक बल, एक आस बिस्वास।
एक राम घनस्याम हित चातक तुलसीदास।।1।।

राम नाम-मनि-दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहिरौ, जौ चाहसि उजियार।।2।।

राम नाम-अवलंब बिनु, परमारथ की आस।
बरषत बारिद-बूँद गहि, चाहत चढ़न अकास।।3।।

राम नाम कलि कामतरु, राम भगति सुरधेनु।
सकल सुमंगल मूल जग, गुरुपद-पंकज - रेनु।।4।।

– तुलसीदास

## 4.2 रहीम के दोहे

तै रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।
निसिबासर लाग्यो रहै, कृष्णचंद्र की ओर।।

जो रहीम जग मारियो, नैन बान की चोट।
भगत-भगत कोउ बचि गए, चरन कमल की ओट।।

गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव।
रहिमन जगत उधार कर, और न कछू उपाव।।

रहिमन यहि संसार में, सब सों मिलिए धाइ।
ना जानै केहि रूप में, नारायण मिलि जाइ।।

## 4.3 मौन करुणा

मैं तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ।
जानता हूँ, इस जगत में,
फूल की है आयु कितनी।
और यौवन की उभरती
साँस में है वायु कितनी
इसलिए आकाश का विस्तार
सारा चाहता हूँ।
मैं तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ।
प्रश्न चिह्नों में उठी हैं
भाग्य सागर की हिलोरें।
आँसुओं से रहित होंगी
क्या नयन की नमित कोरें?
जो तुम्हें कर दे द्रवित
वह अश्रु-धारा चाहता हूँ।
मैं तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ।
जोड़ कर कण-कण कृपण
आकाश ने तारे सजाए।
जो कि उज्ज्वल हैं सही,
पर क्या किसी के काम आए ?

प्राण ! मैं तो मार्गदर्शक
एक तारा चाहता हूँ।
मैं तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ।
यह उठा कैसा प्रभंजन !
जुड़ गईं जैसे दिशाएँ।
एक तरणी, एक नाविक
और कितनी आपदाएँ !
क्या कहूँ मँझधार में ही
मैं किनारा चाहता हूँ।
मैं तुम्हारी मौन करुणा का सहारा चाहता हूँ।

– रामकुमार वर्मा

## प्रश्न-अभ्यास

### 4. भक्ति

4.1-2 तुलसीदास और रहीम के दोहे

1. तुलसीदास स्वयं को चातक क्यों मान रहे हैं ?
2. कवि ने किन शब्दों में गुरु-चरणों की महिमा का गुणगान किया है?
3. उन पंक्तियों को उद्धृत कीजिए जिनका आशय हो -
   (क) राम के सहारे के बिना परमार्थ संभव नहीं।
   (ख) विषय वासनाओं से केवल भक्त ही बच पाते हैं।
   (ग) रामनाम का मणिदीप अंतर्मन और बहिर्जगत दोनों को प्रकाशित करता है।
4. रहीम संसार में सबसे प्रेमपूर्वक और दौड़-दौड़ कर मिलने का परामर्श क्यों देते हैं?
5. तुलसी और रहीम के भक्तिपरक दोहों में आपको कौन-सा दोहा अच्छा लगा? और क्यों ?
6. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) रामनाम-अवलंब बिनु परमारथ की आस।
   बरषत बारिद-बूँद गहि चाहत चढ़न अकास।।
   (ख) गहि सरनागति राम की, भवसागर की नाव।
   रहिमन जगत उधार कर और न कछू उपाव।।
7. अलंकार बताइए:
   (क) राम नाम-मनि-दीप धरु जीह-देहरी द्वार।
   (ख) एक राम-घनस्याम हित चातक तुलसीदास।
   (ग) बरषत बारिद बूँद।

### 4.3 मौन करुणा

1. कवि किसकी मौन करुणा का सहारा चाहता है ? और क्यों ?

2. कवि ने ईश्वर की करुणा को मौन क्यों कहा है ?
3. कवि फूल की आयु और यौवन की साँसों के उदाहरण देकर ईश्वर से क्या चाहता है ? आकांक्षा का विस्तार, विस्तृत जीवन
4. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:
   (क) प्रश्न चिह्नों में उठी हैं
   भाग्य सागर की हिलोरें।
   (ख) क्या कहूँ मँझधार में ही
   मैं किनारा चाहता हूँ।
5. इस कविता में आए अनुप्रास अलंकार के उदाहरणों को रेखांकित कीजिए।
6. आकाश के अनंत तारों को महत्त्वहीन बताते हुए कवि किस प्रकार का एक ही तारा चाहता है ? जो प्रकाश उत्पन्न करे और मार्ग दर्शक बन सके।
7. प्रभंजन, तरणी, नाविक, मँझधार और किनारा के समस्त रूपक को स्पष्ट कीजिए।

प्रभंजन - भयंकर विपत्तियाँ, विघ्न आदि

तरणी - ईश्वर विश्वास [illegible]

नाविक - संघर्षशील मानव - भक्त

मँझधार - संघर्षों में उलझा जीवन

किनारा - जीवन सिद्धि

# शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

4.1-2 तुलसी दास और रहीम के दोहे

जीह = जीभ, जिह्वा
कामतरु = कल्पवृक्ष, जिसके बारे में मान्यता है कि उससे जो भी माँगा जाए, वही देता है।
रेनु = रेणु, धूल
मैन = कामदेव
सरनागति = शरणागति, रक्षा के लिये शरण में जाना
उपाव = उपाय

4.3 मौन करुणा

नमित = झुका हुआ
द्रवित = पिघलना
कृपण = कंजूस
उज्ज्वल = चमकता हुआ
प्रभंजन = जोर की हवा, तूफानी हवा
तरणी = नाव
आपदाएँ = कष्ट
मँझधार = धारा के बीच में

# 5. उत्साह और आत्मविश्वास

## 5.1 कौन पार फिर पहुँचाएगा

टकराएगा नहीं आज उद्धत लहरों से,
कौन ज्वार फिर तुझे पार तक पहुँचाएगा ?
अब तक धरती अचल रही पैरों के नीचे,
फूलों की दे ओट सुरभि के घेरे खींचे,
पर पहुँचेगा पथी दूसरे तट पर उस दिन,
जब चरणों के नीचे सागर लहराएगा !
गर्त शिखर बन, उठे लिए भँवरों का मेला,
हुए पिघल ज्योतिष्क तिमिर की निश्चल बेला,
तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता,
तब तो बहता समय शिला-सा जम जाएगा,
लौ से दीप्त देव-प्रतिमा की उज्ज्वल आँखें,
किरणें बनी पुजारी के हित वर की पाँखें,
वज्र शिला पर गढ़ी ध्वंस की रेखाएँ क्या,
यह अंगारक हास नहीं पिघला पाएगा ?
धूल पोंछ काँटे मत गिन छाले मत सहला
मत ठंडे संकल्प आँसुओं से तू बहला,
तुझसे हो यदि अग्नि-स्नात यह प्रलय महोत्सव
तभी मरण का स्वस्ति-गान जीवन गाएगा
टकराएगा नहीं आज उन्मद लहरों से
कौन ज्वार फिर तुझे दिवस तक पहुँचाएगा

—महादेवी वर्मा

## 5.2 लोहे के पेड़ हरे होंगे

लोहे के पेड़ हरे होंगे, तू गान प्रेम का गाता चल,
नम होगी यह मिट्टी जरूर, आँसू के कण बरसाता चल।
सिसकियों और चीत्कारों से, जितना भी हो आकाश भरा,
कंकालों का हो ढेर, खप्परों से चाहे हो पटी धरा।
आशा के स्वर का भार, पवन को लेकिन, लेना ही होगा,
जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा।
रंगों के सातों घट उँडेल, यह अँधियाली रँग जाएगी,
उषा को सत्य बनाने को जावक नभ पर छितराता चल।
आदर्शों से आदर्श भिड़े, प्रज्ञा प्रज्ञा पर टूट रही।
प्रतिमा प्रतिमा से लड़ती है, धरती की क़िस्मत फूट रही।
आवर्तों का है विषम जाल, निरुपाय बुद्धि चकराती है,
विज्ञान-यान पर चढ़ी हुई सभ्यता डूबने जाती है।
जब-जब मस्तिष्क जयी होता, संसार ज्ञान से चलता है,
शीतलता की है राह हृदय, तू यह संवाद सुनाता चल।

सूरज है जग का बुझा-बुझा, चंद्रमा मलिन-सा लगता है,
सब की कोशिश बेकार हुई, आलोक न इन का जगता है,
इन मलिन ग्रहों के प्राणों में कोई नवीन आभा भर दे,
जादूगर ! अपने दर्पण पर घिसकर इन को ताज़ा कर दे।
दीपक के जलते प्राण, दिवाली तभी सुहावन होती है,
रोशनी जगत को देने को अपनी अस्थियाँ जलाता चल।
क्या उन्हें देख विस्मित होना, जो हैं अलमस्त बहारों में,
फूलों को जो हैं गूँथ रहे सोने-चाँदी के तारों में ?
मानवता का तू विप्र, गंध-छाया का आदि पुजारी है,
वेदना-पुत्र ! तू तो केवल जलने भर का अधिकारी है।
ले बड़ी खुशी से उठा, सरोवर में जो हँसता चाँद मिले,
दर्पण में रच कर फूल, मगर उसका भी मोल चुकाता चल।

— रामधारी सिंह 'दिनकर'

## प्रश्न-अभ्यास

### 5.1 कौन पार फिर पहुँचाएगा

1. ''तू मोती के द्वीप स्वप्न में रहा खोजता'' का भाव स्पष्ट करते हुए बताइए कि ऐसा करने से बहता समय शिला की तरह क्यों जम जाएगा ? समय को गतिशील करने के लिये क्या करना आवश्यक है ?
2. निराशा और बाधाओं के बीच कठिन यात्रा में साधक के लिये क्या कल्याणकर है?
3. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) पर पहुँचेगा पथी दूसरे तट पर उस दिन,
   जब चरणों के नीचे सागर लहराएगा।

   (ख) धूल पोंछ काँटे मत गिन छाले मत सहला।
   मत ठंडे संकल्प आँसुओं से तू बहला ।।

   (ग) तुमसे हो यदि अग्नि-स्नात यह प्रलय महोत्सव
   तभी मरण का स्वस्ति-गान जीवन गाएगा।

### 5.2 लोहे के पेड़ हरे होंगे

1. ''लोहे के पेड़ हरे होंगे'' - इस प्रबल आत्मविश्वास का क्या आधार है ?
2. दुख और निराशा के वातावरण में मनुष्य का क्या कर्तव्य होना चाहिए ?
3. समाज की कैसी स्थितियाँ देखकर बुद्धि चकराती है? उससे मुक्ति का क्या उपाय हो सकता है ?
4. समाज के हित के लिए अपने जीवन का उत्सर्ग करना पड़ता है - यह भाव कविता की किन पंक्तियों में व्यंजित हुआ है ?
5. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) आशा के स्वर का भार, पवन को लेकिन, लेना ही होगा
   जीवित सपनों के लिए मार्ग मुर्दों को देना ही होगा।

(ख) दीपक के जलते प्राण, दिवाली तभी सुहावन होती है,
रोशनी जगत को देने को अपनी अस्थियाँ जलाता चल।

(ग) मानवता का तू विप्र-गंध छाया का आदि पुजारी है,
वेदना पुत्र ! तू तो केवल जलने भर का अधिकारी है।

## शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

### 5.1 कौन पार फिर पहुँचाएगा

उद्धत = ढीठ
सुरभि = सुगंध
गर्त = गड्ढे
ज्योतिष्क = तारे, सूर्य, चंद्र आदि ग्रह
ध्वंस = विनाश
अंगारक = जलते अंगारे सा
मरण का स्वस्ति गान = महान कार्य के लिए किए गए बलिदान की प्रशंसा

### 5.2 लोहे के पेड़ हरे होंगे

लोहे के पेड़ = मशीनी संस्कृति
चीत्कार = कराह
जावक = आलता, महावर
प्रज्ञा = बुद्धि
आवर्त = भँवर
गंध-छाया = आनंदानुभूति/उज्ज्वल चरित्र
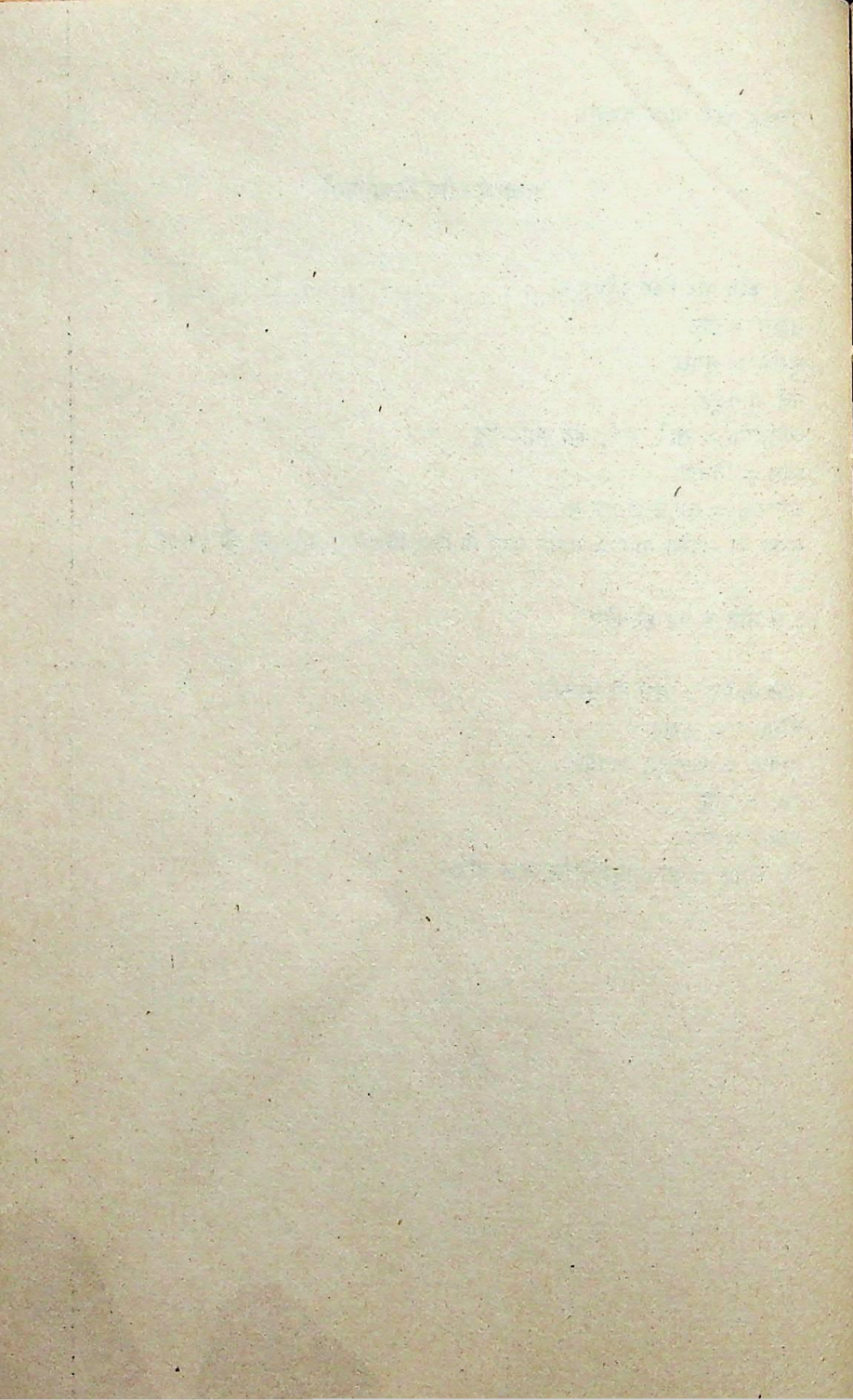
# 6. देश प्रेम और मानवता

## 6.1 हमारा प्यारा भारत वर्ष

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार।
उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक हार।
जगे हम, लगे जगाने विश्व लोक में फैला फिर आलोक।
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।
विमल वाणी ने वीणा ली कमल कोमल कर में सप्रीत।
सप्तस्वर सप्तसिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत
बचाकर बीज रूप से सृष्टि, नाव पर झेल प्रलय का शीत।
अरुण-केतन लेकर निज हाथ वरुण पथ में हम बढ़े अभीत।
सुना है दधीचि का वह त्याग हमारी जातीयता विकास।
पुरंदर ने पवि से है लिखा, अस्थि-युग का मेरे इतिहास।
सिंधु-सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह
दे रही अभी दिखाई भग्न,मग्न रत्नाकर में वह राह।
धर्म का ले ले कर जो नाम, हुआ करती बलि, कर दी बंद।
हमीं नें दिया शांति-संदेश, सुखी होते देकर आनंद।
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम।
भिक्षु हो कर रहते सम्राट् दया दिखलाते घर-घर घूम।
यवन को दिया दया का दान, चीन को मिली धर्म की दृष्टि।
मिला था स्वर्ण-भूमि को रत्न, शील की सिंहल को भी सृष्टि।
किसी का हमने छीना नहीं प्रकृति का रहा पालना यहीं।
हमारी जन्मभूमि थी यही, कहीं से हम आए थे नहीं।
जातियों का उत्थान पतन, आँधियाँ, झड़ीं, प्रचंड समीर।
खड़े देखा, झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर।
चरित के पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा सम्पन्न।
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव।
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान।
जिएँ तो सदा उसी के लिए, यही अभिमान रहे, यह हर्ष,
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारत वर्ष।

जयशंकर प्रसाद

## 6.2 मातृभूमि

नीलांबर परिधान हरित तट पर सुंदर है,
सूर्य-चंद्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है,
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मंडन हैं,
बंदीजन खग-वृंद, शेषफन सिंहासन है,
करते अभिषेक पयोद हैं, बलिहारी इस वेष की
हे मातृभूमि, तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की

जिसकी रज में लोट-लोटकर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरककर खड़े हुए हैं,
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए,
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए,
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि तुझको निरख, मग्न क्यों न हों मोद में?

पाकर तुझसे सभी सुखों को हमने भोगा,
तेरा प्रत्युपकार कभी क्या हमसे होगा ?
तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है,
बस तेरे ही सुरस-सार से सनी हुई है,
फिर अंत समय तू ही इसे अचल देख अपनाएगी।

हे मातृभूमि, यह अंत में तुझमें ही मिल जाएगी ।।

निर्मल तेरा नीर अमृत के, सम उत्तम है,
शीतल मंद सुगंध पवन हर लेता श्रम है,
षट्ऋतुओं का विविध दृश्य युत अद्भुत क्रम है,
हरियाली का फर्श नहीं मखमल से कम है,
शुचि-सुधा सींचता रात में, तुझ पर चंद्रप्रकाश है।
हे मातृभूमि, दिन में तरणि, करता तम का नाश है।

सुरभित, सुंदर सुखद सुमन तुझ पर खिलते हैं,
भाँति-भाँति के सरस, सुधोपम फल मिलते हैं,
ओषधियाँ हैं प्राप्त एक से एक निराली,
खानें शोभित कहीं धातु वर रत्नों वाली,
जो आवश्यक होते हमें, मिलते सभी पदार्थ हैं।
हे मातृभूमि वसुधा, धरा, तेरे नाम यथार्थ हैं।।

क्षमामयी, तू दयामयी है, क्षेममयी है,
सुधामयी, वात्सल्यमयी तू प्रेममयी है,
विभवशालिनी, विश्वपालिनी, दुखहर्त्री है,
भय निवारिणी, शांतिकारिणी, सुखकर्त्री है,
हे शरणदायिनी देवि, तू करती सब का त्राण है।
हे मातृभूमि, संतान हम, तू जननी, तू प्राण है।

जिस पृथ्वी में मिले हमारे पूर्वज प्यारे,
उससे हे भगवान ! कभी हम रहे न न्यारे,
लोट-लोट कर वहीं हृदय को शांत करेंगे,
उसमें मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे,
उस मातृभूमि की धूल में, जब पूरे सन जाएँगे,
होकर भव-बंधन-मुक्त हम, आत्म रूप बन जाएँगे।।

— मैथिलीशरण गुप्त

## प्रश्न-अभ्यास

### 6.1 हमारा प्यारा भारत वर्ष

1. भारत को 'हिमालय का आँगन' कहने के पीछे क्या तात्पर्य है ?
2. निम्नलिखित वाक्यांशों में किन ऐतिहासिक पौराणिक महापुरुषों की ओर संकेत किया गया है :
   (क) एक निर्वासित का उत्साह ....
   (ख) नाव पर झेल प्रलय का शीत ...
   (ग) हुआ करती बलि कर दी बंद ....
   (घ) भिक्षु होकर रहते सम्राट् ....
   (ङ) यवन को दिया दया का दान
3. उन पंक्तियो को उद्धृत कीजिए जिनसे व्यक्त होता है कि :
   (क) भारत हमारा मूल स्थान है, हम बाहर से नहीं आए
   (ख) ज्ञान का प्रकाश सर्वप्रथम भारत में फैला
   (ग) शक्तिशाली होते हुए भी हमने विनम्रता नही छोड़ी
4. ''विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम'' उपर्युक्त कथन की पुष्टि में भारत के प्राचीन और वर्तमान इतिहास से एक-एक उदाहरण दीजिए।
5. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :
   (क) सप्तस्वर सप्त सिंधु में उठे, छिड़ा तब मधुर साम-संगीत।
   (ख) मिला था, स्वर्ण भूमि को रत्न शील की सिंहल को भी सृष्टि।
   (ग) खड़े देखा, झेला हँसते प्रलय में पले हुए हम वीर।
6. निम्नलिखित पंक्ति में "वही है" की आवृत्ति में कौन सी विशेषता प्रकट होती है।

   वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान।
   वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान।

### 6.2 मातृभूमि

1. सर्वेश की सगुण मूर्ति का कवि ने जो स्वरूप चित्रित किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

2. कवि ने बाल्यकाल को मातृभूमि के साथ किस प्रकार जुड़ा हुआ दिखलाया है ?
3. मातृभूमि हम पर क्या-क्या उपकार करती है ?
4. हमारे देश की निम्नलिखित वस्तुओं की किन-किन विशेषताओं का वर्णन किया गया है :
   निर्मल नीर, वायु, पृथ्वी, फूल, फल
5. कवि किन शब्दों में मातृभूमि के प्रति आभार प्रकट करता है ?
6. कवि ने भगवान से क्या माँगा है ?
7. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) करते अभिषेक पयोद हैं
   (ख) तेरी ही यह देह तुझी से बनी हुई है
   (ग) हो कर भव-बंधन-मुक्त हम आत्म रूप बन जाएँगे।

# शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

## 6.1 हमारा प्यारा भारत वर्ष

सप्तस्वर = संगीत में प्रयुक्त होने वाले सात स्वर यथा - सा, रे, ग, म, प, ध, नि।
सप्तसिंधु = सिंधु, रावी, सतलुज, झेलम, सरस्वती, गंगा, यमुना प्राचीन आर्यावर्त की प्रसिद्ध सात नदियाँ हैं।
अरुण केतन = सनातन धर्म की लाल ध्वजा
वरुण पथ = समद्रु मार्ग
पुरंदर = इंद्र, स्वर्ग का राजा
पवि = वज्र, दधीचि की हड्डियों से जिसका निर्माण हुआ।
अस्थियुग का इतिहास = पाषाण युग के समान, प्राचीन काल का वह युग जब हड्डियों से हथियार और औजार बना करते थे।
स्वर्ण-भूमि = वर्मा
सिंहल = श्रीलंका
रत्न = दर्शन, ज्ञान और चरित्र जिन्हें बौद्ध एवं जैन धर्म में 'त्रिरत्न' कहते हैं।
शील = बौद्ध धर्म में शील या सदाचार की पाँच प्रमुख बातें, जिनका आचरण और पालन प्रत्येक सत्पुरुष के लिए आवश्यक कहा गया है यथा - अस्तेय, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, सत्य और मादक पदार्थों का त्याग।

## 6.2 मातृभूमि

नीलांबर = नीले रंग का आकाश
परिधान = पहनावा
मेखला = करधनी
बंदीजन = चारण
पयोद = बादल
परमहंस = आत्मज्ञानी साधू
निरखना = देखना

मोद = आनंद
वक्ष स्थल = छाती
प्रासाद = महल
जठरानल = उदर की अग्नि
शुचि = पवित्र
तरणि = सूर्य
सुरभित = सुगंधित
सुधोपम =अमृत के समान
वसुधा = वसु अर्थात् धन को धारण करने वाली/पृथ्वी
धरा = धारण करने वाली (पृथ्वी सभी जीवधारियों को धारण करती है)
क्षेममयी = कल्याण से भरी हुई
दुखहर्त्री = दुख को हरने वाली
भय निवारिणी = भय को दूर करने वाली
त्राण =रक्षा
न्यारा =पृथक
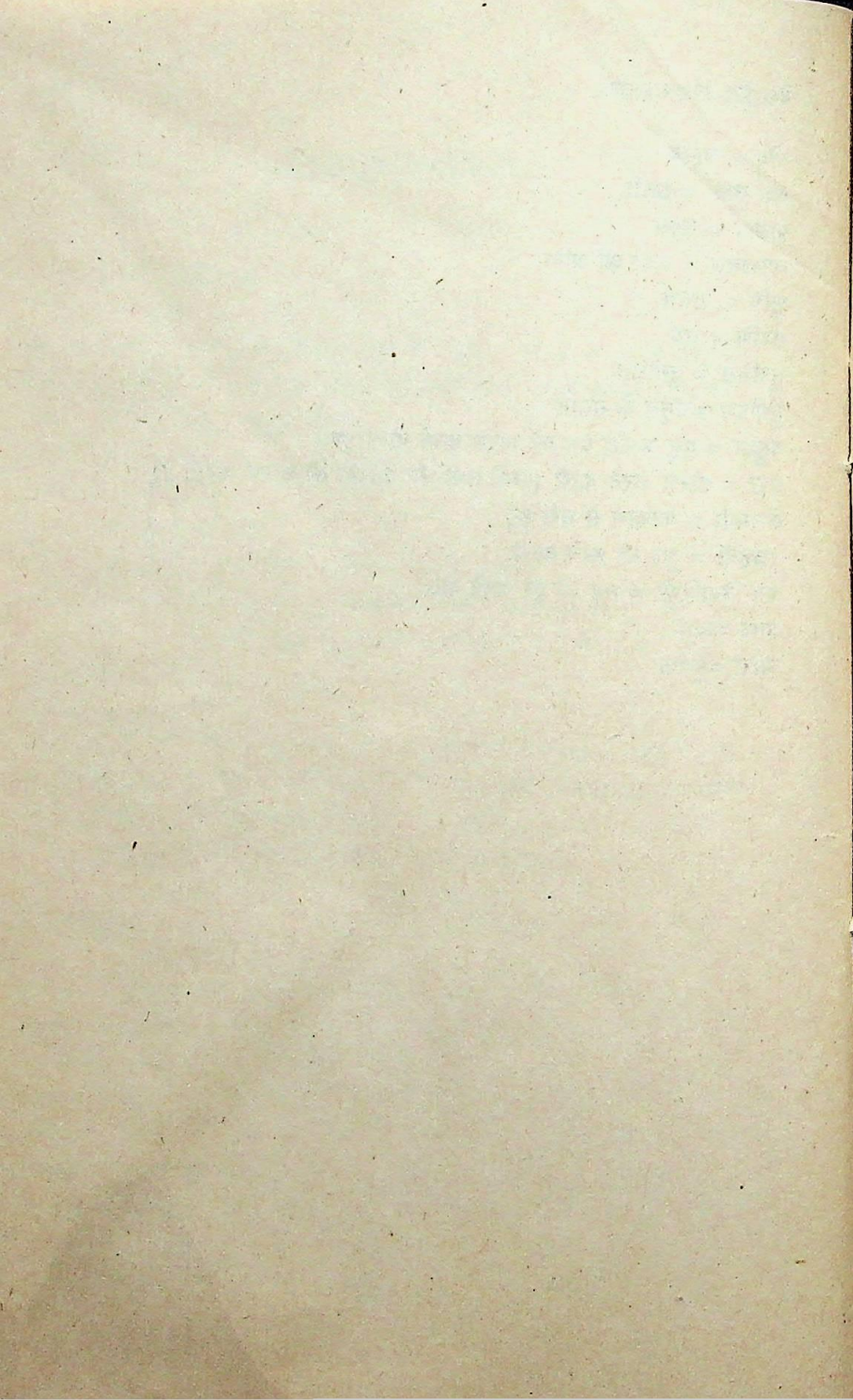
# 7. विविध
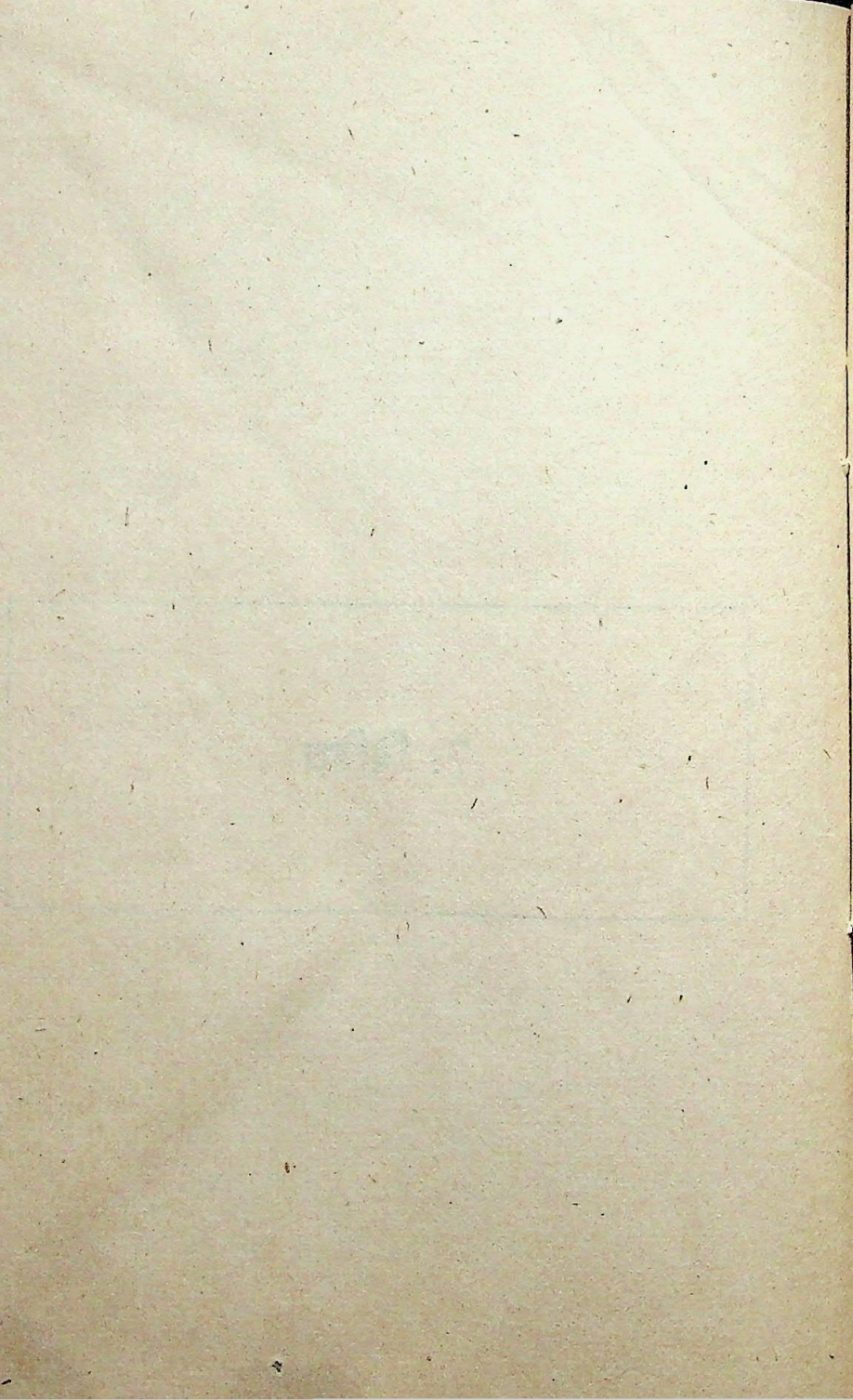
## 7.1 सरोज स्मृति

जीवित कविते, शत-शर-जर्जर
छोड़ कर पिता को पृथ्वी पर
तू गई स्वर्ग, क्या यह विचार --
''जब पिता करेंगे मार्ग पार
यह, अक्षम अति, तब मैं सक्षम
तारूँगी कर गह दुस्तर तम?-''
कहता तेरा प्रयाण सविनय
कोई न था अन्य भावोदय।
धन्ये, मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित कर न सका !

तू सवा साल की जब कोमल
पहचान रही ज्ञान में चपल
माँ का मुख, हो चुम्बित क्षण-क्षण
भरती जीवन में नव जीवन,
वह चरित पूर्ण कर गई चली
तू नानी की गोद जा पली।
सब किए वहीं कौतुक विनोद
उस घर निशि-वासर भरे मोद ;
तब भी मैं इसी तरह समस्त
कवि-जीवन में व्यर्थ भी व्यस्त
लिखता अबाध गति मुक्त छंद
पर संपादक गण निरानंद
वापस कर देते पद सत्वर
दे एक-पंक्ति दो में उत्तर।

धीरे-धीरे फिर बढ़ा चरण
बाल्य की केलियों का प्रांगण
कर पार, कुंज-तारुण्य सुघर
आई, लावण्य भार थर-थर
काँपा कोमलता पर सस्वर
ज्यों मालकौश नव वीणा पर
फूटा कैसा प्रिय कंठ-स्वर
माँ की मधुरिमा व्यंजना-भर
हर पिता-कंठ की दृप्त-धार
उत्कलित रागिनी की बहार !
बन जन्मसिद्ध गायिका, तन्वि,
मेरे स्वर की रागिनी वह्नि,
साकार हुई दृष्टि में सुधर,
समझा मैं क्या संस्कार प्रखर।

सासु ने कहा लख एक दिवस :
''भैया अब नहीं हमारा बस,
पालना-पोसना रहा काम,
देना 'सरोज' को 'धन्य-धाम'
शुचि वर के कर, कुलीन लखकर
है काम तुम्हारा धर्मोत्तर;
अब कुछ दिन इसे साथ लेकर
अपने घर रहो ढूँढ़कर वर''

सुनकर गुनकर चुपचाप रहा
कुछ भी न कहा, न अहो, न अहा;
ले चला साथ मैं तुझे कनक
ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनक
अपने जीवन की प्रभा विमल
ले आया निज-गृह-छाया-तल।

फिर आई याद-"मुझे सज्जन
है मिला प्रथम ही विद्वज्जन"

खत लिखा, बुला भेजा तत्क्षण
युवक भी मिला प्रफुल्ल, चेतन
बोला मैं--मैं हूँ रिक्त-हस्त
इस समय, विवेचन में समस्त
जो कुछ है मेरा अपना धन
पूर्वज से मिला करूँ अर्पण
यदि महाजनों को, तो विवाह
कर सकता हूँ पर नहीं चाह

मेरी ऐसी, दहेज देकर
मैं मूर्ख बनूँ, यह नहीं सुघर,
बारात बुलाकर मिथ्या-व्यय
मैं करूँ नहीं ऐसा सुसमय
हो गया ब्याह आत्मीय स्वजन
कोई थे नहीं, न आमंत्रण
था भेजा गया, विवाह-राग
भर रहा न घर निशि-दिवस जाग;
माँ की कुल शिक्षा मैंने दी,.
पुष्प-सेज तेरी स्वयं रची,
कुछ दिन रह गृह तू फिर समोद
बैठी नानी की स्नेह गोद।

वह लता वहीं की, जहाँ कली
तू खिली, स्नेह से हिली पली
अंत भी उसी गोद में शरण
ली, मूँदे दृग वर महामरण

मुझ भाग्यहीन की तू संबल
युग वर्ष बाद जब हुई विकल

दुख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।
इस पथ पर मेरे कार्य सकल
हों भ्रष्ट शील के-से शतदल।
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर करता मैं तेरा तर्पण !

— सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

## 7.2 सवेरे-सवेरे

कार्तिक की एक हसँमुख सुबह।
नदी-तट से लौटती गंगा नहा कर
सुवासित भीगी हवाएँ
सदा पावन
माँ सरीखी
अभी जैसे मंदिरों में चढ़ा कर खुशरंग फूल
ठंड से सीत्कारती घर में घुसी हों,
और सोते देख मुझको जगाती हों --
सिरहाने रख एक अंजलि फूल हरसिंगार के,
नर्म ठंडी उँगलियों से गाल छू कर प्यार से,
बाल बिखरे हुए तनिक सँवार के . . .

— कुँवर नारायण

## 7.3 लोहे का स्वाद

''शब्द किस तरह
कविता बनते हैं
इसे देखो
अक्षरों के बीच गिरे हुए
आदमी को पढ़ो
क्या तुमने सुना कि यह
लोहे की आवाज़ है या
मिट्टी में गिरे हुए खून
का रंग।''—
लोहे का स्वाद
लोहार से मत पूछो
उस घोड़े से पूछो
जिसके मुँह में लगाम है।

– सुदामा पांडेय 'धूमिल

## प्रश्न-अभ्यास

### 7.1 सरोज स्मृति

1. सरोज स्मृति कविता का प्रधान स्वर क्या है ?
   (क) संतान-प्रेम का आनंद
   (ख) संतान की मृत्यु पर शोक
   (ग) कवि-जीवन की विवशता
   (घ) कवि का आत्मालाप
2. "वह चरित पूर्ण कर गई चली" -- पंक्ति में "वह" से कवि का संकेत किस ओर है ?
3. सरोज का बाल्यकाल कहाँ बीता और क्यों ?
4. किन पंक्तियों में निम्नलिखित भाव व्यक्त हुआ है ?
   (क) कवि के रूप में निराला बहुत संघर्ष कर रहे थे।
   (ख) सरोज में अपने माता-पिता दोनों के गुण आए थे।
   (ग) निराला दहेज देकर विवाह करने के पक्ष में न थे।
   (घ) निराला अपने समस्त कर्मों के फल से सरोज को तृप्त करना चाहते हैं ?
5. भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) धीरे-धीरे फिर बढ़ा चरण
   बाल्य की केलियों का प्रांगण
   कर पार, कुंज तारुण्य सुघर
   आई, लावण्य-भार थर-थर।
   (ख) ले, चला साथ मैं तुझे कनक
   ज्यों भिक्षुक लेकर स्वर्ण-झनक
   अपने जीवन की प्रभा विमल
   ले आया निज-गृह-छाया-तल।
   (ग) दुख ही जीवन की कथा रही
   क्या कहूँ आज जो नहीं कहीं।

### 7.2 सवेरे-सवेरे

1. सवेरे-सवेरे माँ सरीखी समीर जगाने आती है। कविता में यह क्यों कहा गया है?
2. वे किस प्रकार जगाती हैं?
3. काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) नदी के तट से लौटती गंगा नहा कर
   सुवासित भीगी हवाएँ
   (ख) सिरहाने रख एक अंजलि फूल हरसिंगार के,
   नर्म ठंडी उंगलियों से गाल छूकर प्यार से,
   बाल बिखरे हुए तनिक सँवार के ...

4. इस कविता में संतान के प्रति माँ के प्यार को किस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है?
5. प्रातः कालीन बेला में नींद से कौन जगाती है ?
   (क) ममतामयी माँ
   (ख) कार्तिक-भोर की समीर
   (ग) कार्तिक की हँसमुख सुबह
   (घ) खुशरंग-फूल

### 7.3 लोहे का स्वाद

1. ''लोहे का स्वाद'' कविता के केन्द्र में कौन है? सही उत्तर छाँटिए।
   (क) लोहार
   (ख) साहित्यकार
   (ग) शोषक
   (घ) शोषित
2. नीचे स्तंभ ''क'' में इस कविता में आए कुछ प्रतीक है और स्तंभ ''ख'' में उनके अर्थ भिन्न क्रम में हैं। उन्हें उचित क्रम में रखिए :

| | (क) | (ख) |
|---|---|---|
| (अ) | अक्षरों के बीच गिरा आदमी | सत्ताधारी/उद्योगपति |
| (ब) | लोहे की आवाज़ | मेहनत कश का श्रम |
| (स) | मिट्टी में गिरा खून | शोषण की पीड़ा |
| (द) | लोहे का स्वाद | दलित-शोषित व्यक्ति |

# शब्दार्थ और टिप्पणियाँ

## 7.1 सरोज स्मृति

सुघर = सुंदर
लावण्य = सुंदरता
दृप्त = गर्वयुक्त
उत्कलित = विकसित
रिक्त-हस्त = खाली हाथ, धनहीन, गरीब
संबल = सहारा
तर्पण = मृतात्मा की तृप्ति के लिए तिल-जल आदि से किया जाने वाला कर्म विशेष।

## 7.2 सवेरे-सवेरे

सुवासित = सुगंधित
सीत्कारती = सिसकारती

## 7.3 लोहे का स्वाद

प्रगतिशील कवि धूमिल की यह कविता उनकी अंतिम रचना है, जिसे उन्होंने 14 जनवरी 1975 को भीषण सिरदर्द की अवस्था में लिखा था।

अक्षरों के बीच गिरा आदमी = शोषित व्यक्ति
लोहे की आवाज = शासक का आतंक
मिट्टी में गिरा खून = श्रमिक का श्रम